पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2014-16

ओ३म्

कृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१६, अंक:-८, फरवरी, सन्-२०१४, सं०-२०७० वि०, दयानंदाब्द १९०, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११४; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

इतिहास का एक पृष्ठ

सरदार पटेल ने बहुत पहले भाँप ली थी चीन की चुनौती

आर्य समाज के मंच से किया था जूझने का आह्वान

पटेल राष्ट्रवादी व्यक्ति थे। उन्होंने भारत को एक राष्ट्र बनाने में महती भूमिका निभाई थी। वह जहाँ एक ओर गाँधी जी से जुड़े थे, वहीं आर्य समाज से भी उनका निकट सम्पर्क था। सरदार पटेल ने अपनी मृत्यु से पूर्व जो व्याख्यान 11 नवम्बर 1950 को दिया था, वह आर्य समाज के मंच से ही दिया था। 'दि हिन्दुस्तान टाइम्स' में प्रकाशित सम्बन्धित समाचार का हिन्दी अनुवाद पाठकों के अवलोकनार्थ यहाँ प्रस्तुत है। अनुवादक हैं- सत्येन्द्र सिंह आर्य। -सं.

दि हिन्दुस्तान टाइम्स, ११ नवम्बर १९५०

सरदार पटेल ने दिल्ली में कहा कि तिब्बत और नेपाल में जो घटनाएँ घट रही हैं, उनसे उपजे वर्तमान खतरों एवं सम्भावित खतरों से अपनी नवअर्जित स्वतंत्रता की रक्षा के लिए देशवासी अपनी पार्टी की क्षुद्र बातों से ऊपर उठकर संगठित हों। उन्होंने आगे कहा कि महात्मा गांधी और स्वामी दयानन्द के दिखाये मार्ग पर चलकर हम वर्तमान कठिनाइयों से पार पा सकते हैं। समाज सुधारक एवं चिन्तक स्वामी दयानन्द के ६७वें बलिदान दिवस पर सरदार पटेल केन्द्रीय आर्य संस्था द्वारा आयोजित सभा को सम्बोधित कर रहे थे। नेपाल में हुई हाल ही की घटनाओं की ओर संकेत करते हुए सरदार पटेल ने कहा, "हमारे इस पड़ोसी देश में वहाँ के राजा ने भारतीय दूतावास में शरण मांगी है। हम उन्हें शरण देने से किस तरह मना कर सकते हैं? हमने शरण दे दी। नेपाल में इस समय वास्तविक सत्ता जिनके कब्जे में है, वे राजा को राज्य का प्रमुख स्वीकार नहीं करते। उन्होंने राजा की गद्दी पर राजा के तीन वर्ष के पौत्र को बैठा दिया है। वे हमसे इस स्थिति को स्वीकार करने की आशा करते हैं। हम ऐसा कैसे कर सकते हैं?"

सरदान पटेल ने जोर देकर कहा कि नेपाल की आन्तरिक कलह ने भारत की उत्तर की सीमाओं पर बाह्य खतरों के मंडराने की सम्भावना बढ़ा दी है। इसलिए भारतीयों के लिए यह अनिवार्य हो गया है कि किसी भी ओर से आने वाली किसी भी चुनौती के लिए हम अच्छी प्रकार तैयार रहें।

सरदार पटेल ने तिब्बत में चीन की दखलन्दाजी की आलोचना की और कहा कि तिब्बत के परम्परागत रूप से शान्ति प्रिय लोगों के विरुद्ध तलवार का प्रयोग न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता। संसार का अन्य कोई राष्ट्र ऐसा शान्तिप्रिय नहीं है जैसा तिब्बत है। इसलिए भारत ऐसा नहीं मानता था कि चीन सरकार तिब्बत के प्रश्न को हल करने के लिए शक्ति का प्रयोग करेगी। पटेल ने कहा कि "चीन सरकार ने भारत की तिब्बत के मामले को शान्तिपूर्वक हल करने की सलाह नहीं मानी। उन्होंने अपनी सेना तिब्बत में भेज दी और इस सैन्य कार्यवाई को यह कहकर सही ठहराने की कोशिश की कि तिब्बत में विदेशी तत्त्व चीन के हितों के विरुद्ध कार्य कर रहे थे। परन्तु चीन का भय निराधार था। तिब्बत में किसी बाहरी शक्ति की कोई रुचि नहीं है। भारत ने यह बात चीन सरकार को सुस्पष्ट कर दी थी। यदि चीन सरकार भारत की सलाह मान लेती तो शास्त्रों के प्रयोग (सैन्य कार्यवाई) से बचा जा सकता था।"

अपनी बात जारी रखते हुए सरदार पटेल ने कहा कि कोई भी नहीं बता सकता कि चीन की इस कार्यवाई का क्या परिणाम होगा। परन्तु बल प्रयोग ने अन्ततः भय एवं तनाव को बढ़ाया ही है। ऐसा इसलिए हुआ कि जब कोई देश अपनी सैन्य शक्ति एवं बल के नशे में चूर हो, तो वह किसी मामले पर शान्तिपूर्वक विचार नहीं कर सकता। तथापि सैन्य कार्यवाई अनुचित थी। संसार की वर्तमान स्थिति में, ऐसी घटनाओं से नया विश्वयुद्ध शुरू हो सकता है, जिसका अर्थ होगा मानव जाति का विनाश। इस कठिन समय में, सरदार पटेल ने कहा कि, भारतीय लोगों का कर्त्तव्य इस कठिनाई से भागना नहीं, इस कठिनाई का बहादुरी से सामना करना है। स्वामी दयानन्द एवं महात्मा गांधी दोनों का यही वास्तविक संदेश था- "कायरता आप पर हावी न हो। खतरों से आप भागो नहीं। भारत की साढ़े तीन वर्ष पुरानी स्वतंत्रता की पूर्णतः रक्षा की जानी चाहिए। आज भारत सब प्रकार के खतरों से घिरा हुआ है। ऐसे में देशवासियों का यह कर्त्तव्य है कि वे इन दो महान् सन्तों के उपदेशों को याद रखें और सभी खतरों का निडर होकर सामना करें।"

बात जारी रखते हुए उप प्रधानमंत्री ने घोषणा की, "आज के कलियुग में हम अहिंसा के बदले में अहिंसा का व्यवहार करेंगे। परन्तु यदि किसी ने हमारे विरुद्ध बल प्रयोग किया तो हम भी उसका उत्तर बलपूर्वक देंगे।" सरदार पटेल ने कहा कि स्वामी दयानन्द उन दो सन्तों में से एक हैं जो गुजरात ने विश्व को दिये। यद्यपि स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी का जन्म गुजरात में हुआ था परन्तु उन्होंने अपना जीवन मानवता की सेवा में अर्पित कर दिया। अन्ततः उनका सरोकार केवल सारे भारत से ही नहीं बल्कि सारे संसार से रहा। अब यह लोगों के लिए है कि वे इन दो सन्तों के उपदेशों को समझें और अपने वास्तविक जीवन में उनका पालन करें। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने देश को असहाय होने की दलदल में गहरे धंसने से बचा लिया। उन्होंने वास्तव में भारत की स्वाधीनता की नींव रखी। अस्पृश्यता के विरुद्ध आन्दोलन, जिसका बाद में महात्मा गांधी ने समर्थन किया, स्वामी जी ने शुरू किया था। जिन लोगों का कभी बलपूर्वक धर्मान्तरण कर दिया गया था उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित करने का कार्य स्वामी जी ने आरम्भ किया। धर्म के नाम पर अधर्म का उपदेश देने की उस समय में प्रचलित उस प्रवृत्ति पर स्वामी दयानन्द ने पूर्णतः रोक लगा दी जिसने हिन्दू धर्म को संसार के सामने उपहास की वस्तु बना दिया था।

सरदार पटेल ने कहा, "स्वामी दयानन्द ने हिन्दू धर्म के ऊपर जमा हो गई सारी गन्दगी और कालिख को हटा दिया। अन्ध विश्वासों का जो घटाटोप हिन्दू धर्म पर छा गया था उसे भी स्वामी जी ने दूर कर दिया और उसे स्वच्छ रूप में प्रकाशित कर दिया।

भारत के संविधान में अस्पृश्यता को अपराध घोषित किया गया है तथा हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया गया है। सरदार पटेल ने कहा कि यह वास्तव में स्वामी दयानन्द ही थे जिन्होंने सर्वप्रथम प्रतिपादित किया कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाया जाए। लोगों को यह तो विदित होना चाहिए कि स्वामी जी ने विदेशी शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। वह भारतीय संस्कृति की ही देन थे। तथापि स्वामी जी अन्य देशों से वह सबकुछ लेने को तैयार थे जो अच्छा और उपयोगी हो। यह सही और उपयुक्त ही था कि भारतीय संस्कृति को उचित स्थान मिले।

('परोपकारी' से साभार)

विनय पीयूष

उसको क्यों हो संशय कोई !

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानु पश्यति।
सर्व भूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति।।

(यजु० 40/6)

उसको क्यों हो संशय कोई!

देख रहा जो,
प्राणि-अप्राणि सभी भूतों को
एक परम् आत्मा के भीतर;

देख रहा जो,
प्राणि-अप्राणि सभी भूतों में
एक आत्मा अक्षय-अक्षर;

उसको क्यों हो विस्मय कोई!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

खूने शहीद और स्याही की एक बूँद

स्व.रेवतीरमण एडवोकेट के प्रभाव और पुरुषार्थ से लखनऊ के सामाजिक जीवन में दो तिथियाँ बहुत ही आकर्षक, प्रेरणाप्रद और उपादेय बन गई थीं- २३ दिसम्बर और शिवरात्रि। २३ दिसम्बर को प्रतिवर्ष शहीद स्मारक पर अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस मनाया जाता था; जिसमें यज्ञ-हवन से वर्ष भर के प्रदूषित वातावरण को शुद्ध-पवित्र बनाने के साथ ही देशप्रेम और सद्भाव से परिपूर्ण भजन प्रवचन होते थे तथा शहीदों की स्मृति में दीपदान के अनन्तर सूक्ष्म प्रसाद वितरण के साथ लोग घर वापस लौटते थे। सामाजिक अनुशासन की शिक्षा नई पीढ़ी प्राप्त करती थी। लखनऊ जनपद की समस्त आर्य समाजों के अलावा अनेक अधिकारीगण तथा सामाजिक-सांस्कृतिक-साहित्यिक सरोकारों से जुड़े लोगों की सहभागिता देखते ही बनती थी।

इस बार भी हमलोग परिवार सहित बड़ी उत्सुकता के साथ २३ दिसम्बर २०१३ को स्मारक स्थल पर पहुँचने और शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के मनसूबे बाँध ही रहे थे कि यह सूचना मिली कि इस वर्ष उक्त आयोजन शहीद स्मारक स्थल पर होना मुमकिन नहीं है। कदाचित् कोर्ट की कोई रूलिंग है? मन में विचार आ रहा था कि पिछले दिनों में धरना प्रदर्शन आदि के कारण अत्यंत अराजकता, अव्यवस्था तथा प्रदूषणों के चलते माननीय न्यायालय ने अगर कोई ऐसी व्यवस्था दी होगी तो न्यायालय में पुनः अपील करके जिस सदुद्देश्य से शहीद स्मारक बना है, उसी सदुद्देश्य की पूर्ति की दुहाई देकर कई दशकों से चली आ रही सांस्कृतिक परम्परा को अविच्छिन्न बनाये रखने की अनुमति प्राप्त कर ली जायगी क्योंकि एकमात्र श्रद्धानन्द बलिदान दिवस ही ऐसा आयोजन था; जो इतने शान्ति-सौहार्द, सद्भावनापूर्वक शहीद स्मारक स्थल पर प्रतिवर्ष सम्पन्न होता रहा है, जिसकी तुलना अन्य किसी कार्यक्रम से नहीं की जा सकती है। अधोगति एवं पराधीनता के लिए जिस 'आलस्य और प्रमाद' को महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में जिम्मेदार ठहराया है, उसी के वशीभूत होने के कारण ऐसा कुछ हुआ नहीं और बलिदान दिवस का आयोजन स्थल बदल दिया गया और इस बदले हुए स्थान की सूचना मुझे तब मिली, जबकि आयोजन परिवर्तित स्थान आर्य समाज, लाजपत नगर के सभागार में प्रारम्भ हो चुका था। इतने कम समय से प्रतिपल जाम से जूझते हुए लखनऊ में इंदिरानगर से लाजपतनगर भला कैसे पहुंचा जा सकता था?

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में देश की स्वतंत्रता सद्भावना और राष्ट्रीय एकता के मार्ग पर पूर्ण अहिंसा और सत्य का व्रत धारण कर विश्ववंद्य महात्मा गाँधी के साथ कदम से कदम मिलकर चलते हुए महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) वह पहले नेता थे, जिन्होंने स्वतंत्रता की यज्ञानल में अपने प्राणों की आहुति दी थी। वे ही एकमात्र ऐसे सर्वमान्य नेता थे, जिन्होंने मुस्लिम समाज के आमंत्रण पर दिल्ली की जामा मस्जिद से एक बार नहीं, दो बार शान्ति-प्रेम भाईचारे का संदेश प्रसारित किया था। इतना ही नहीं, ब्रिटिश हुक्मरानों की संगीनों के समक्ष सीना खोल कर खड़े हो जाने वाले वीर योद्धा स्वामी जी महाराज ही थे। ऐसी महान आत्मा को श्रद्धांजलि और श्रद्धा प्रदीप यदि शहीद स्मारक स्थल पर नहीं अर्पित किये गये तो शहीद स्मारक अपना अर्थ ही खो देगा। मेरा विश्वास है कि यदि यह समस्य सुविचारित ढँग से न्यायालय पीठ के समक्ष रखी गई होती तो मा.न्यायमूर्तिगण ऐसे समाजोपयोगी पारंपरिक आयोजन को कभी नहीं रोकते?

देश और समाज के कल्याणार्थ प्राण अर्पित करने वाले हुतात्मा की समता किसी कवि, कलाकार या फनकार से नहीं की जा सकती क्योंकि शहीद का रक्त संसार में सर्वाधिक मूल्यवान होता है। एक भिन्न संदर्भ में मुझे एक प्रसंग याद आ रहा है। काकोरी के अमर शहीदों पं.रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक, चन्द्रशेखर आजाद इत्यादि के विरुद्ध जब लखनऊ में केस चल रहा था, तो ब्रिटिश सरकार को शहीदों के विरोध में और ब्रिटिश सरकार के पक्ष मे पैरवी करने वाला कोई भारतीय वकील नहीं मिला। काफी जद्दोजहद के बाद अंग्रेजों ने जगत नारायण नामक एक वकील खोज निकाला था जो 'मुल्ला' उपनाम से शायरी भी करते थे। जब देश आजाद हो गया तो भी जगतनारायण मुल्ला के सुपुत्र श्री आनन्द नारायण मुल्ला, जो स्वयं भी अच्छे शायर थे, मा.न्यायमूर्ति बने। अपनी सेवा निवृत्ति के समय हरदोई में दिये गये अपने अंतिम फैसले में पुलिस के कृत्यों के संदर्भ में अपनी एक टिप्पणी के कारण वे काफी चर्चित हुए। उनकी वह टिप्पणी जनताको इतनी सटीक लगी कि श्री मुल्ला लोकसभा सदस्य भी निर्वाचित हो गये। शायर तो थे ही, किसी प्रसंग में उन्होंने अपनी एक शायरी की कुछ पंक्तियाँ लोकसभा में भी सुनाईं जो इस प्रकार थीं-

खूने शहीद से भी कीमत में है सिवा-
फनकार के कलम की स्याही की एक बूँद!

अर्थात् कवि की लेखनी की स्याही की एक बूँद शहीद के खून से भी ज्यादा कीमती होती है। मुल्ला साहब की इन पंक्तियों की संचार माध्यमों में काफी चर्चा हुई और वे इतने अलोकप्रिय हुए कि न कि वे अगला लोकसभा चुनाव हारे वरन् उन्हीं दिनों लखनऊ के एक समाजवादी नेता और कवि श्री चन्द्रिका प्रसाद 'करुणेश' ने निम्नांकित पंक्तियाँ लिखकर उन्हें निरुत्तर कर दिया था और यह प्रमाणित कर दिया था कि देश और समाज के लिए बलिदान होने वालों का स्थान सर्वोपरि होता है-

दुश्मन रहा है कौम का, पैरोकार नहीं है
इंसानियत का वो अलमवरदार नहीं है
जो तौलता स्याही से है खूने शहीद को-
गद्दार है, गद्दार वो, फनकार नहीं है।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१३८

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिँश्चित्तꣳसर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥७॥

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिनऽइव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥८॥ (यजु.३४/५,६)

हे परम विद्वन् परमेश्वर! आप की कृपा से मेरे मन में जैसे रथ के मध्य घुरा में आरा लगे रहते हैं वैसे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और जिसमें अथर्ववेद भी प्रतिष्ठित होता है और जिसमें सर्वज्ञ सर्वव्यापक प्रजा का साक्षी चित्त चेतन विदित होता है वह मेरा मन अविद्या का अभाव कर विद्याप्रिय सदा रहै।।७।।

हे सर्वनियन्ता ईश्वर! जो मेरा मन रस्सी से घोड़ों के समान अथवा घोड़ों के नियन्ता सारथि के तुल्य मनुष्यों को अत्यन्त इधर-उधर डुलाता है, जो हृदय में प्रतिष्ठित गतिमान् और अत्यन्त वेग वाला है, वह सब इन्द्रियों को अधर्माचरण से रोक के धर्मपथ में सदा चलाया करे। ऐसी कृपा मुझ पर कीजिये।।८।।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम॥९॥ (यजु.४०/१६)

स्तुति प्रार्थना कैसी हो?

हे सुख के दाता स्वप्रकाशस्वरूप सबको जाननेहारे परमात्मन्! आप हमको श्रेष्ठ मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञानों को प्राप्त कराइये और जो हम में कुटिल पापाचरण रूप मार्ग है उससे पृथक् कीजिये।

इसीलिये हम लोग नम्रतापूर्वक आपकी बहुत सी स्तुति करते हैं कि आप हमको पवित्र करें।।१।।

मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्भकं मा न उक्षन्त मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥१॥ (यजु.१६/१५)

हे रुद्र! (दुष्टों को पाप के दुःखस्वरूप फल देके रुलाने वाले परमेश्वर) आप हमारे छोटे बड़े जन, गर्भ, माता, पिता और प्रिय बन्धुवर्ग तथा शरीरों का हनन करने के लिए प्रेरित मत कीजिए। ऐसे मार्ग से हमको चलाइये जिससे हम आपके दण्डनीय न हों।

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमयेति॥ (शतपथ ब्रा.)

हे परमगुरो परमात्मन्! आप हमको असत् मार्ग से पृथक् कर सन्मार्ग में प्राप्त कीजिये। अविद्यान्धकार का छुड़ा के विद्यारूप सूर्य को प्राप्त कीजिये और मृत्युरोग से पृथक् करके मोक्ष के आनन्द रूप अमृत को प्राप्त कीजिये। अर्थात् जिस-जिस दोष वा दुर्गुण से परमेश्वर और अपने को भी पृथक् मान के परमेश्वर की प्रार्थना की जाती है वह विधि निषेधमुख होने से सगुण, निर्गुण प्रार्थना। जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है उसको वैसा ही वर्त्तमान करना चाहिये अर्थात् जैसे सर्वोत्तम बुद्धि की प्राप्ति के लिये परमेश्वर की प्रार्थना करे उसके लिये जितना अपने से प्रयत्न हो सके उतना किया करे। अर्थात् अपने पुरुषार्थ के उपरान्त प्रार्थना करनी योग्य है।

(क्रमशः)

वेदांजलि

यह मिट्टी का घर मेरी मंजिल नहीं

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू पू.संसद सदस्य

मो षु वरुण मृन्मयं गृहं राजन्नहं गमम्।
मृळा सुक्षत्र मृळय॥ —ऋग्वेद 7/89/1

शब्दार्थ-

हे (**राजन्**) हे सर्वप्रकाशक (**वरुण**) वरणीय प्रभो! (**अहम्**) मैं (**मृन्मयम्**) मिट्टी के बने हुए (**गृहम्**) घर को, शरीर को (**मा**) नहीं (**उ**) निश्चय ही (**सुगमम्**) सुखकारक, जीवन का लक्ष्य [समझूँ, मानूँ] हे (**मृळा**) सुखस्वरूप (**सुक्षत्र**) सब संकटनिवारक! (**मृळय**) हमें सुख और शान्ति प्रदान कर।

व्याख्या-

इस मंत्र में प्रभु के लिए जो सम्बोधन हैं, उनका मंत्र के आशय को समझने के लिए बहुत महत्त्व है। पहला सम्बोधन है-**राजन्**। यह शब्द दीप्त्यर्थक राजृ धातु से निष्पन्न हुआ है, अतः राजा शब्द का अर्थ हुआ दीप्तियुक्त, प्रकाशयुक्त। प्रकाश पुंज तो सूर्य है, किन्तु आगे चलकर लोक में इस शब्द के अर्थ ने जो निखार पाया, उसके आधार पर ऐसा प्रकाश जिसमें कोमलता और स्निग्धता भी हो, वह राजा है। जैसा कि प्रसिद्ध है "**राजा प्रकृतिरंजनात्**"- प्रजा को सुखी और प्रसन्न रखनेवाला ही राजा कहा जाता है। प्रजा का अर्थ सन्तान भी है। जिस प्रकार बुद्धिमान् माता-पिता सन्तान के हित में सदा तत्पर रहते हैं, दण्ड देते समय भी स्निग्धता उपेक्षित नहीं होती, वही गुण योग्य राजा में भी होना चाहिए। महाकवि कालिदास ने दिलीप का वर्णन करते हुए रघुवंश में कहा है-'प्रजा की सुशिक्षा, रक्षा और पालन करने के कारण राजा दिलीप ही उनका पिता था। उनके अपने पिता तो केवल उन्हें उत्पन्न करनेवाले थे।'

मंत्र में दूसरा संबोधन है-**वरुण**। वैदिक और लौकिक साहित्य में वरुण-विषय में इतना कुछ वर्णित है उसमें से वरुण के वास्तविक स्वरूप को निकालकर समझना कठिन हो जाता है। वरुण की कहानी महाभारत से लेकर ऐतरेय ब्राह्मण तक बिखरी पड़ी है। पौराणिक साहित्य में वरुण जल का देवता है। भारत की स्वाधीनता के पश्चात् जब नौसेना का पुनर्गठन हुआ और उसके लिए युद्धपोतों का निर्माण हुआ तो उन युद्धपोतों पर आदर्श वाक्य (मोटो) के रूप में लिखने के लिए वेदमंत्र के "**शं वरुणः**" प्रतीक को चुना गया। इसमें भी वही भाव कारण है कि वरुण जल के देवता हैं और ये पोत सदा जल में ही रहेंगे, अतः इसमें काम करने वालों की कुशलता, जल के देवता वरुण की कृपा पर ही निर्भर है, अतः वेद के प्रतीक द्वारा प्रार्थना की गई कि '**शं वरुणः**'- वह वरुण प्रभु हमें सुख और शान्ति दे!

अतः भक्त सब ओर मन को घुमाकर उसकी सत्ता की प्रतीति करता है। अतः धातु के आधार पर ऋषि दयानन्द जी महाराज ने वरुण का सीधा अर्थ किया- '**वृणोति भक्तान्, व्रियते वा भक्तैः**।' प्रभु के उपासक संसार के समस्त आकर्षणों को ठुकराकर उसका वरण करते हैं, इसी कारण प्रभु को वरुण कहते हैं।

तीसरा सम्बोधन **मृळा** है। प्रभु सुख स्वरूप हैं। संसार की वस्तुओं में जो सुख की अनुभूति होती है, वह भी उस प्रभु की व्यापकता के कारण ही होती है। किन्तु मनुष्य की आत्मा इस प्रकार के आनन्द के लिए व्याकुल रहती है जिसका क्रम नित्य नया हो और अविच्छिन्न रहे।

मंत्र में चौथा संबोधन **सुक्षत्र**-कष्ट निवारक है। यदि कोई कर्मफल ही भोगना हो तो बात दूसरी है, अन्यथा घोर संकट में से भी मनुष्य ऐसे सुरक्षित बच निकलता है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। लोक में इस प्रकार की घटनाएँ प्रायः होती रहती हैं। कुछ वर्ष हुए, झरिया की कोयले की खानों में वर्षा का पानी भर गया और पचास मजदूर अन्दर ही रह गये। दुर्घटना के बाद पानी के पम्प लगाकर पानी निकालने में आठ-दस दिन लग गये। इतने दिन के बाद भी तीन मजदूर बेहोशी की अवस्था में जीवित निकल आए। अब आप सोचते रहिए कि यह कैसे सम्भव हुआ? पर हुआ-यही उसकी लीला है। इसलिए मंत्र में प्रभु को **सुक्षत्र**, अर्थात् कष्ट से भली प्रकार त्राण रक्षा करने वाला बताया। प्रभु को पुकारने के बाद भक्त अब अपनी कथा कहता है- 'हे प्रभो! मैं तेरी व्यवस्था के अनुसार इस मिट्टी के घर में हूँ।'

प्रस्तुत मंत्र में 'मानव-शरीर को मिट्टी का घर' बताया है। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि हम इसे तुच्छ समझकर इसकी उपेक्षा करें और इसका ठीक ढंग से रखरखाव न करें। शास्त्रकारों ने शरीर को स्वस्थ और स्वच्छ रखने के लिए पर्याप्त निर्देश दिये हैं। यह मिट्टी का घर साधारण घर नहीं है। इसमें रचयिता ने वह कौशल दिखाया है कि इसका एक-एक पुर्ज़ा अमूल्य है। यदि एक पुर्ज़ा नष्ट हो जाय तो संसार का कोई कारीगर वैसा पुर्ज़ा बना नहीं सकता। नाक कटने पर आजकल कृत्रिम नाक लग जाती है, जो रंगरूप में असली नाक जैसी लगती है, किन्तु असली नाक के अग्रभाग में जो गन्धग्रहण करने की क्षमता है, वह इसमें नहीं है, न हो सकती है।

वेद कहता है और शास्त्र उसका स्पष्टीकरण करते हैं कि जिन कारणों से यह शरीर बना है, वे सब तुच्छ हैं, किन्तु उन्हें महत्त्वपूर्ण बनाने में परम कौशल निर्माता का है। इसके साथ ही इसमें निवास करनेवाले जीव की योग्यता की भी कसौटी यह है कि इस बन्धन में से मोक्ष का स्वातन्त्र्य उपलब्ध करे।

इसलिए वेद में कहा- मैं इस मिट्टी के मकान को ही सुख का कारण और मंजिल न समझूँ, अपितु इसके द्वारा साधना करके हे सुखस्वरूप! संकटनिवारक! आप तक पहुँचकर मोक्ष का आनन्द ले सकूँ। *('श्रुति सौरभ' से साभार)*

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-७०

विशाले ब्रह्माण्डे क्षितिरियमहोऽत्यन्तरमणी
ऋतूनां वैचित्र्याद् भरतजननी सुन्दरतमा।
वरेण्यायां भूमौ वरदगुजरात्रं वरतमं
दयानन्दं सृष्ट्वा सृजति पितरं गान्धिनमपि।।

इस विशाल ब्रह्माण्ड में
धरती ही अकेली, अति सुन्दर है!
और सभी ऋतुओं की विचित्रता और
अनुपम छटा के कारण धरती पर
भारत देश सर्वाधिक सुन्दर है !!
सर्वश्रेष्ठ भारत भूमि में
वर देने वाली गुजरात भूमि
सर्वोत्तम है !!!
इसी भूमि ने पहले दयानन्द की सृष्टि की और
बाद में राष्ट्रपिता
महात्मा गाँधी को हमें दिया।

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

होता सदस्य परिचय-49

लोकोपकार ही जिनका जीवन है

प्रियदर्शिनी मित्तल

-कमलेश पाल

श्रीमती प्रियदर्शिनी मित्तल का जन्म 11 नवम्बर 1933 को मेरठ में हुआ था। आपके पिता स्व. परशुराम गुप्त तथा माता श्रीमती राजेश्वरी देवी– दोनों ही अत्यंत उदार एवं धर्मात्मा थे। माता–पिता के उच्च संस्कार प्रियदर्शिनी को विरासत में मिले। आपकी शिक्षा मेरठ के प्रसिद्ध रघुनाथ गर्ल्स कालेज में हुई।

19 फरवरी 1959 को आपका पाणिग्रहण संस्कार मुजफ्फरनगर जनपद के ग्राम सिसौली के प्रसिद्ध जमींदार लाला राजाराम जी के सुपौत्र वीरेन्द्रनाथ मित्तल के साथ पूर्ण वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ था। वीरेन्द्रनाथ के पिता श्री त्रिलोकीनाथ जी दृढ़ आर्य समाजी थे तथा आर्य समाज सिसौली से संबद्ध थे। ज्ञातव्य है कि आर्य समाज सिसौली की स्थापना पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने की थी।

प्रियदर्शिनी जी अपने पति श्री वीरेन्द्रनाथ जी के साथ प्रारम्भ में जबलपुर में रहीं तथा कालान्तर में वे कलकत्ता की एक व्यावसायिक फर्म में सेवारत रहीं। यहां उन्होंने अपने पति के साथ 'अनु उद्योग' के नाम से अपनी फैक्ट्री प्रारंभ की जो उत्तरोत्तर व्यावसायिक सफलता के सोपानों को पार करती गई। आपके पारिवारिक जीवन में दो पुत्रियाँ और एक पुत्र है। आपकी बड़ी बेटी मंजरी नोएडा में अपने परिवार के साथ रहती है तथा शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रही है। छोटी बेटी मीना अपने परिवार के साथ शिकागो (अमेरिका) में रहती है तथा शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत है। आपके सुपुत्र श्री संदीप मित्तल गत 20 वर्षों से बंगलौर में रहकर अपनी कम्पनी का सफलतापूर्वक संचालन कर रहे हैं।

1988 में प्रियदर्शिनी के पतिदेव श्री वीरेन्द्रनाथ का एक लोमहर्षक दुर्घटना में देहान्त हो गया। संकट की विषम घड़ी में प्रियदर्शिनी जी ने धैर्य और साहस का परिचय देते हुए अपने परिवार को संभाला तथा पति के अधूरे कार्यों को पूरा करने मे जुट गईं।

आपका परिवार ईश्वरभक्त है। आपके पुत्र संदीप मित्तल आर्य समाज इन्दिरा नगर, बैंगलोर के सम्प्रति मंत्री हैं। दैनिक यज्ञ–सत्संग तथा वैदिक स्वाध्याय आपकी दिनचर्या में शामिल है। पुत्रवधू बिन्दु, पौत्री अंशी तथा पौत्र देवांश सभी दादी प्रियदर्शिनी की सेवा सुश्रूषा करते रहते हैं तथा लोकोपकार के कार्यों को करते हुए जीवन यापन कर रहे हैं। आर्य लोक वार्ता परिवार प्रियदर्शिनी जी की दीर्घायु तथा सुखमय जीवन की कामना करता है।

-योगाश्रम, एम.एस. 137, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

सत्संग

जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा : शान्ति हवन/पाठ मरण के दिन से या दाह संस्कार के तीसरे दिन करना चाहिए? *-बाँके बिहारी 'हर्ष', फैजाबाद (उ.प्र.)*

समाधान : शान्ति हवन के लिए समय या दिनों की गणना अगर करना जरूरी हो तो दाह संस्कार के दिन से करना उचित है।

आमतौर से आर्य परिवारों में या आर्य समाज से प्रभावित परिवारों में तीसरे दिन शान्ति हवन करने की परम्परा बन गई है। क्योंकि दाह संस्कार के तीसरे दिन अस्थि चयन संभव हो पाता है, इसीलिए शान्ति हवन भी तीसरे दिन या उसके बाद करते हैं।

इस संबन्ध में 'संस्कार विधि' के अन्तर्गत पूज्य स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने जो निर्देश किया है, उसे याद रखना चाहिए। 'संस्कार विधि' का यह निर्देश मार्गदर्शन हेतु ज्यों का त्यों उद्धृत किया जा रहा है–

"जब शरीर भस्म हो जावे पुनः सब जने वस्त्र प्रक्षालन, स्नान करके जिसके घर में मृत्यु हुआ हो उसके घर की मार्जन, लेपन, प्रक्षालनादि से शुद्धि करके, पृष्ठ ७-११ में लिखे प्रमाणे स्वस्ति वाचन शान्तिकरण का पाठ और पृष्ठ ४-६ में लिखे प्रमाणे ईश्वरोपासना करके इन्हीं स्वस्तिवाचन और शान्तिकरण के मन्त्रों से जहाँ अंक, अर्थात् मंत्र पूरा हो, वहाँ 'स्वाहा' शब्द का उच्चारण करके सुगन्ध्यादि मिले हुए घृत की आहुति घर में देवें कि जिससे मृतक का वायु घर से निकल जाय और शुद्ध वायु घर में प्रवेश करे और सबका चित्त प्रसन्न रहे। यदि उस दिन रात्रि हो जाय तो थोड़ी-सी (आहुति) देकर, दूसरे दिन प्रातःकाल उसी प्रकार स्वस्तिवाचन और शान्तिकरण के मंत्रों से आहुति देवें।

तत्पश्चात् जब तीसरा दिन हो तब मृतक का कोई सम्बन्धी श्मशान में जाकर चिता से अस्थि उठाके उस श्मशान भूमि में कहीं पृथक् रख देवे। बस, इसके आगे मृतक के लिए कुछ भी कर्म कर्त्तव्य नहीं है, क्योंकि पूर्व (भस्मान्तं शरीरम्) यजुर्वेद के मंत्र के प्रमाण से स्पष्ट हो चुका कि दाहकर्म और अस्थिसंचयन से पृथक् मृतक के लिए दूसरा कोई भी कर्म कर्त्तव्य नहीं है। हाँ, यदि वह सम्पन्न हो तो अपने जीते जी वा मरे पीछे उसके सम्बन्धी वेदविद्या, वेदोक्तकर्म का प्रचार, अनाथपालन, वेदोक्त धर्मोपदेश की प्रवृत्ति के लिए जितना धन प्रदान करें, बहुत अच्छी बात है।"

जिज्ञासा : क्या मृतक की अस्थियों को हरिद्वार या पुष्कर आदि तीर्थ-स्थानों पर ले जाकर उन्हें गंगा आदि नदियों में अथवा किसी सरोवर के जल में डालना चाहिए? *-देवेश मिश्र, मदियाटी रोड, चिनहट, लखनऊ*

समाधान : नहीं। अस्थियों को किसी भी जल में नहीं डालना चाहिए। प्रत्युत उन्हें पूर्वोक्त विधि से भूमिसात् ही करना चाहिए। अन्त्येष्टि संस्कार के द्वारा शरीरस्थ जल वाष्प बनकर पुनः जल में ही मिल गया, अग्नि तत्त्व अग्नि में, वायु तत्त्व वायु में और शेष रहा भस्म+अस्थिरूप पार्थिव तत्त्व, उसे भी पार्थिव अंशों (मृत्तिका) में ही विसर्जित करके मिश्रित कर देना चाहिये। अस्थियों को जल में डालने से जल अशुद्ध, विकृत और अनुपयोगी हो जाता है। अतः जल में डालना अनुचित है। जो लोग यह कहते हैं कि 'अस्थियों में फॉसफोरस होता है अतः उनसे जल विकृत या अशुद्ध नहीं होता' वे लोग थोड़ा विचार करें फास्फोरस के अतिरिक्त भी अस्थियों में बहुत कुछ होता है, जो जल की अशुद्धि का हेतु बनता है। वे लोग, इन फास्फोरस वाली अस्थियों को अपने घर के जल में तो क्या घर की बगिया के कुण्ड केजल में भी डालना पसन्द नहीं करेंगे। क्यों? इसलिए कि उन्हें ज्ञात है कि इससे वह जल अशुद्ध तथा दूषित हो जायेगा। तब फिर गंगा आदि नदियों अथवा सरोवरों के जल को क्यों मलिन या अशुद्ध करना?

अतः सिद्धान्तानुसार अस्थि-भस्मों को भूमिसात् ही करना चाहिए किसी भी जल में नहीं डालना चाहिए। अपने सत्य सिद्धान्तों का दृढ़तापूर्वक पालन करने से ही आगे स्वच्छ तथा स्वस्थ परम्परा बनती है और लोग भी तभी उस सुन्दर तथा उचित परम्परा का अनुसरण करते हैं।

(आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश-'अंत्येष्टि संस्कार')

वाचनालय से

-आनन्द

'अल्लाह शब्द केवल मुस्लिम समुदाय के लिए' शीर्षक समाचार देते हुए **'पंजाब केसरी'** लिखता है कि मलेशिया के सुल्तान अब्दुल हलीम मुअज्जम ने गैर मुस्लिम समुदाय को ईश्वर के लिए 'अल्लाह' शब्द का इस्तेमाल करने से रोकने वाले अदालत के आदेश का समर्थन किया है। अपने जन्मदिन के अवसर पर दिये गये भाषण में सुल्तान ने कहा कि एक बहुलतावादी समाज में धार्मिक संवेदनशीलता, विशेषकर एकसंघीय धर्म के रूप में इस्लाम से जुड़ी संवेदनशीलता, का सम्मान किया जाना चाहिए। अगर कानूनी और न्यायिक फैसलों से ऐसे प्रावधान कर दिये जायें, तो मतभेद और विवादों से बचा जा सकता है।

बहुलतावादी मलय समाज में अक्टूबर में (न्यायालय ने) व्यवस्था दी थी कि ईश्वर के लिये 'अल्लाह' शब्द का इस्तेमाल केवल बहुसंख्यक मलय मुस्लिम ही कर सकते हैं। दूसरे समुदायों को इस शब्द का इस्तेमाल करने की इजाजत नहीं है।

'पाकिस्तान में ईशनिन्दा के दोषी को मौत की सज़ा, १० लाख का जुर्माना भी लगाया' शीर्षक समाचार देते हुए **'दैनिक भास्कर'** लिखता है कि रावलपिण्डी की एक कोर्ट ने ईशनिन्दा के दोषी को मौत की सजा सुनाई है। गुरुवार को कोर्ट ने मोहम्मद असगर को ईशनिन्दा को दोषी करार देते हुए उसे मौत की सजा सुनाई। अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश नावेद इकबाल ने असगर पर दस लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया है।

असगर को साल २०१० में सदीकाबाद से तब गिरफ्तार किया गया था, जब उसने पुलिस अधिकारियों समेत कई लोगों को खत लिखकर ये दावा किया था कि वो ईश्वर का दूत है।

पाकिस्तान के ईशनिन्दा कानून में इबादतगाहों को अपवित्र करने, मजहबी भावनाएं भड़काने, पैगम्बर हज़रत मुहम्मद की आलोचना और कुरान शरीफ को नुकसान पहुंचाने जैसे अपराधों के लिए सजा का प्रावधान है। इस कानून में कुरान को नुकसान पहुँचाने वाले के लिये उम्रकैद, जबकि पैगम्बर की निन्दा करने वाले के लिये मौत की सजा का प्रावधान है। पाकिस्तान में ईशनिन्दा का कानून भारत-पाकिस्तान के विभाजन से पहले लाया गया था, जब ब्रिटिश सरकार का शासन था।

'अमेरिका जाकर गुम हो गये हिन्दुस्तान के १६३ वैदिक पण्डित'। **'राजस्थान पत्रिका'** के अनुसार उत्तर भारत के गाँवों से वैदिक पण्डित के रूप प्रशिक्षित किये जाने के लिये लाये गये कम से कम १६३ किशोर अमेरिका में पिछले एक वर्ष से लापता हैं। इन किशोरों को महर्षि महेश योगी द्वारा स्थापित दो संस्थानों द्वारा प्रशिक्षित किया जाना था।

शिकागो से प्रकाशित होने वाली साप्ताहिक पत्रिका **'हाइ इण्डिया'** के ताजा अंक में प्रकाशित एक रपट के मुताबिक, १०५० भारतीय किशोरों को आयोवा के फायर फील्ड स्थित महर्षि वैदिक सिटी और महर्षि यूनिवर्सिटी ऑफ मैनेजमेण्ट लाया गया था, जिनमें से करीब १६३ का पिछले एक वर्ष से अतापता नहीं है। लापता किशोरों में कुछ की उम्र मात्र १६ वर्ष है।...शिक्षण केन्द्र के अधिकारियों ने पत्रिका को बताया, ...या तो आव्रजन उद्देश्य के लिये या फिर अपने अमरीकी सपनों को पूरा करने के लिये वे यहाँ से निकल भागे।

भारतीय मुसलमानों की शादियों की कुछ स्थानीय (?) परम्पराओं तथा रीति रिवाजों पर टिप्पणी करता एक सुधारवादी लेख मुस्लिम सामाजिक एवं साहित्यिक मासिक पत्रिका **'सच्चा राही'** (लखनऊ) ने प्रकाशित किया है। 'हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में' शीर्षक लेख के लेखक हैं हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह०। लेखक के शब्द हैं– हिन्दुस्तानी मुसलमानों की शादियों में कुछ तत्त्व स्थानीय हैं, जिन्होंने यहीं के मुसलमानों की विशेषता का रूप धारण कर लिया है और दूसरे देशों के मुसलमान इनसे अवगत नहीं। यथा, भारत के अनेक प्रान्तों में लड़के की ओर से माँगें होती हैं, जिनकी पूर्ति करना बेटी वाले के लिये अनिवार्य होता है। इसको कुछ स्थानों पर 'तिलक' की संज्ञा दी जाती है। स्वयं भारत में प्रत्येक स्थान पर इसका रिवाज़ नहीं। अरब या तुर्की के मुसलमानों को इसका समझना भी मुश्किल है कि इसकी वास्तविकता क्या है और इसका कोई नैतिक औचित्य हो सकता है?...इसी तरह से बेटी वालों की ओर से भोज का रिवाज़, जो अच्छा खासा वलीमा मालूम होता है, दूसरे देशों में नहीं होता। इसी प्रकार बेटी की ओर से दिए हुए दहेज़ का प्रदर्शन और बारात के शहर में गस्त करने का भी दूसरे देशों में पता नहीं। इसके अतिरिक्त शादियों में मुँह दिखायी, सलाम कराई, न्योता, आपस में हंसी-मजाक, चौथी आदि के अतिरिक्त बीसियों रस्में हैं, जो बहुत से हिन्दुस्तानी खानदानों में अभी तक प्रचलित हैं और जो हिन्दुस्तान के साथ विशिष्ट रूप से सम्बद्ध हैं। से सम्भवतः इस विश्वास पर आधारित हैं कि शादी एक उल्लासपूर्ण समारोह है। मनोरंजन, हंसी-मजाक और आनन्दित होने का शुभ अवसर है।...मौलाना लिखते हैं कि यह विचारधारा हिन्दुस्तान के स्वभाव एवं प्रवृत्ति से मेल खाती है, जो सदैव से आमोद-प्रमोद का प्रेमी तथा रंगा-रंगी, नूतनता, मेल-मिलाप, अनुकंपा तथा प्रफुल्लता का लालायित रहा है और जिसका प्रदर्शन यहाँ के मेलों, त्योहारों तथा रस्मों में किया गया है।

कट्टरता की गिरफ्त में आ चुके बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिन्दुओं की खराब हालत रेखांकित करता कृपा शंकर चौबे का लेख 'बांग्लादेश की भयावह तस्वीर' **'दैनिक जागरण'** ने प्रकाशित किया है। लेखक लिखता है कि बांग्लादेश में चुनाव बाद की हिंसा थमने का नाम नहीं ले रही है। इस हिंसा के सबसे अधिक शिकार हिन्दू हो रहे हैं। ...एक बांग्ला दैनिक के मुताबिक इस दौरान अल्पसंख्यकों के पांच सौ घरों में आग लगाई गई है।...जमात-ए-इस्लामी व बांग्लादेश्या नेशनलिस्ट पार्टी के समर्थकों ने जेसोर जिले के चेपातला में हिन्दू परिवारों पर अत्याचार किये और महिलाओं के साथ ज्यादती की। कालीगंज, टाला और कलखा में प्रायः सभी हिन्दुओं के घरों को आग लगा दी गयी। बांग्लादेश के कट्टरपंथी इसलिये भी अल्पसंख्यकों से इस समय चिढ़े हैं, क्योंकि उनके चुनाव बहिष्कार के बावजूद अल्संख्यकों ने मतदान में हिस्सा लिया। हर बार की तरह इस बार भी हजारों बांग्लादेशी हिन्दू भागकर पश्चिम बंगाल के उत्तरी २४ परगना, नदिया, दक्षिण दिनाजपुर में आश्रय लिये हुए हैं। उस पर जो हिन्दू इस पार आ गये, कभी नहीं लौटे।

शुभाकांक्षा

आपके द्वारा प्रकाशित 'आर्य लोक वार्ता' का जनवरी २०१४ अंक देखा। अत्यंत सुखद आनन्द की अनुभूति हुई। इसके दो कारण हैं-एक, इसलिए कि 'आर्य लोक वार्ता' को प्रकाशित होते आज १७-१८ वर्ष हो गए हैं, यह पत्र की सफलता का श्रेष्ठतम प्रमाण है। दूसरा कारण, संपादकीय लेख द्वारा आपने अनेकों भूली बिसरी स्मृतियाँ उजागर कर दीं। कैसे आपके सम्पर्क व सहयोग से हम दोनों भी कुछ सामाजिक कार्यों के प्रति उद्यत हुए। आर्य समाज के अनेकों कार्य कलापों/कार्यक्रमों में आपका भरपूर सहयोग हमेशा प्राप्त हुआ। यह हमारे लिए हमेशा प्रेरणा का स्रोत रहा। श्रीमती कमल प्रति माह महिला वैदिक सत्संग किया करती थीं, अनेकों अवसर ऐसे भी आये जब महिलाओं का पूर्ण सहयोग न मिलने पर उत्साह कम होता दिखाई दिया, परन्तु आपकी प्रेरणा से कार्यक्रम चलता रहा....आदि आदि।

'आर्य लोक वार्ता' की अभूतपूर्व सफलता से मैं वास्तव में अत्यंत प्रभावित हुआ, इसका पूरा श्रेय केवल आप ही को है। आप वास्तव में बधाई के पात्र हैं। मैं परमपिता परमेश्वर से आपके उत्तम स्वास्थ्य व दीर्घ आयु की हमेश प्रार्थना करता रहूँगा। अनेकों स्मृतियों एवं सम्मान के साथ, *-इंजी.जेपी अग्रवाल*

२०१४, गायत्री लोक, कनखल, हरिद्वार

***

'आर्य लोक वार्ता' के जनवरी, २०१४ अंक में डॉ.विवेक आर्य का लेख आश्चर्यभूत, ज्ञान वर्द्धक एवं बेबाक है जो महात्मा गाँधी के ज्येष्ठ पुत्र हीरालाल गाँधी द्वारा धर्म परिवर्तन और फिर मोह भंग विषयक ऐतिहासिक तथ्यों पर नवीन प्रकाश डालता है। आपका संस्मरणात्मक सम्पादकीय असरदार है। इससे यह जानकारी भी प्राप्त हुई कि 'आर्य लोक वार्ता' रूपी कमल सर्वप्रथम श्रीमती कमल अग्रवाल के उपजाऊ आँगन में खिलकर आज दूर-दूर तक अपनी मनोहारी सुरभि बिखेर रहा है। डॉ.शान्तिदेव बाला का आलेख सारगर्भित एवं प्रेरक है। आचार्य दीपंकर जी का 'दयानन्द चरितम्', आनन्द कुमार जी का धारावाहिक 'मनुष्य का विराट् रूप' आदि भी इस दिव्य पत्र की शोभा बढ़ा रहे हैं। 'काव्यायन' के अन्तर्गत रचनाएँ उरहर हैं। पढ़कर आह्लादित एवं अभिभूत हुआ। अनेक महत्त्वपूर्ण समाचारों की भी जानकारी प्राप्त हुई।

-डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

जी-०२, लोरपुर रेजीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' जनवरी अंक में डॉ.विवेक आर्य के आलेख का पूरक अंश पढ़कर चित्त में हर्षयुक्त आश्वस्ति की अनुभूति हुई। मां कस्तूरबा का अपने ज्येष्ठ पुत्र हीरालाल गांधी के नाम मार्मिक पत्र मां की मनोदशा का प्रकटीकरण तो करता ही है साथ ही उन मुस्लिमों की संकीर्ण मनोवृत्तियों को भी इंगित करता है जिन्होंने स्वार्थवश हीरालाल गांधी की कमियों का अनुचित लाभ उठाया। ऐसी त्रासद घटना किसी भी पिता को विचलित कर सकती है। यहां तो पिता राष्ट्रवंद्य महात्मा गांधी स्वयं थे। आर्य समाज की आलोचना विद्वेषवश भले ही कोई करे

किन्तु समाज सुधार और देश को स्वतंत्र कराने में महर्षि दयानन्द के अवदान को सच्चे राष्ट्रभक्त कभी विस्मृत नहीं कर पायेंगे। आलेख 'संत दर्शन का प्रभाव' तथा 'जीवन जीने का वास्तविक सूत्र' सुचिन्तनपूर्ण लगे। श्री नरेन्द्र भूषण का परिचय सुखप्रद रहा इससे पूर्व मुझे उनके साहित्यकार होने का ज्ञान था। उनका सामाजिक जुड़ाव प्रेरक है। सम्पादकीय के माध्यम से श्रीमती कमल अग्रवाल के गोलोकवासी होने पर उनका भावभीना पुण्यस्मरण अनित्या 'कमल' की सुरभि का आभास हुआ। 'काव्यायन' में श्री दिनेश मिश्र 'राही' तथा कपिलदेव राय की रचनाएँ विशेष प्रभावी रहीं। कालजयी काव्य में पद्मश्री नीरज के अध्यात्म-दर्शन से ओतप्रोत गीत हृदय को छू गया। यह स्तम्भ निस्सन्देह अद्भुत है, आपको साधुवाद।

शीत-व्यूह को तोड़ यशस्वी आया सरस वसंत है।
परिवर्तन के लिए प्रफुल्लित, वसुधा प्रकृति अनन्त है।
वन जल अन्न वायु संसाधन का समुचित करें प्रयोग
ओम रूप में हर्ष लुटाता दयावान भगवन्त है।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

११७, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' के दिसम्बर २०१३ अंक में प्रकाशित अग्रलेख 'मेरी चार धाम यात्रा' ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया है। परिणामस्वरूप मैं अपनी प्रतिक्रिया आप तक पहुँचाने हेतु विवश हुआ। उक्त लेख विशेषताओं से परिपूर्ण है। इसमें संस्मरण, रेखाचित्र तथा ललित निबंध- तीनों प्रकार की विशेषताओं का सम्मिश्रण है। निबंधकला का यह उत्कृष्ट नमूना है। एक भी वाक्य कहीं फालतू नज़र नहीं आता है। साथ ही यह उद्देश्य परक निबंध है। यदि इसके कलात्मक पक्ष को छोड़ भी दें तो यह माता-पिता तथा गुरुभक्ति की शिक्षा देता है। आज समाज तीर्थयात्रा इत्यादि जाने को ही सबकुछ समझता है मगर माता, पिता इत्यादि गुरुजनों की सेवा को गौण समझता है। आपके इस लेख ने बहुतों का मार्ग दर्शन किया है तथा इससे लोग प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं। उच्चस्तरीय साहित्यिक लेख आज पत्रिकाओं में नहीं मिलते किन्तु 'आर्य लोक वार्ता' इसका अपवाद है।

-दीपक दर्शन

१८२, भूसा मंडी, अमीनाबाद, लखनऊ

***

दिसम्बर २०१३ के मुखपृष्ठ पर डॉ. विवेक आर्य का लेख जिसमें महात्मा गाँधी के सुपुत्र हीरालाल से अब्दुल्लाह और पुनः वापसी का विवरण पढ़ा। डॉ.विवेक आर्य के लेख से सही इतिहास का बोध हुआ जो पूर्व में हमें पता नहीं था। संक्षेप में यह सार सामने आया कि गाँधी जी ने भले ही देश की स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाया हो पर अपने निजी और पारिवारिक जीवन में उनका आचरण शून्य था और धर्म की परिभाषा नहीं जानते थे।

'चार धाम यात्रा' का प्रकाश गणेश जी के असली स्वरूप को दर्शाता है जिसे प्रायः कम लोग जानते हैं। लोगों ने एक ऐसी मूर्ति गढ़ दी है जो किसी

मानव जाति में नहीं होती। शिव जी के दो सुपुत्र थे गणेश और कार्तिकेय। गणेश जी ने वेद की 'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान पुरुषो वेदः' के अनुसार पालन कर दिखाया। गणेश एक महान आदर्श पुत्र बने। दिल्ली जाकर अपने गुरुवर से मिलकर एक अद्वितीय दृश्य आपने प्रस्तुत किया। यह अलंकृत संपादकीय हमें अपनी निष्ठा और कर्त्तव्य का बोध कराता है। चार धाम यात्रा के महत्त्व से हमें अवगत कराता है। इस संपादकीय लेख के लिए आपको कोटि कोटि धन्यवाद।

पं.शिवकुमार शास्त्री की धन के प्रति वेदमंत्र की व्याख्या बहुत प्रिय लगी। 'मनुष्य का विराट रूप' में लेखक आनन्द कुमार का द्रष्टान्त बहुत अच्छा लगा। यह ऐसा लेख और शिक्षा है जिसका कोई दूसरा उदाहरण नहीं हो सकता। इन सब लेखों को पढ़कर मैं आपका कृतज्ञ हूँ। *-मदन मोहन जोशी*

११७, पटेलनगर, आलमबाग, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' प्राप्त हुआ, सम्पूर्ण

समाचारों से अवगत हुई। डॉ.विवेक आर्य ने इतिहास के झरोखे से प्रकाश डाला है कि महात्मा गांधी के पुत्र हीरालाल से अब्दुल्लाह और फिर अब्दुल्लाह से हीरालाल कैसे बने। अधिकांश को ऐसी जानकारी नहीं होगी अतः डॉ.विवेक आर्य को बधाई। सम्पादकीय में चार धाम की यात्रा शिक्षाप्रद एवं प्रशंसनीय है। 'वेदांजलि' में ऋग्वेद का मंत्र शुद्ध धनार्जन की शिक्षा देता है। आनन्द कुमार जी ने माघ कवि का द्रष्टांत देकर दान की महिमा पर प्रकाश डाला है, बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। विवेकानन्द जयंती के उपलक्ष्य में डॉ.शान्तिदेव बाला ने जीने का वास्तविक सूत्र हमें बतलाया है। हम सब पाठक उनके आभारी हैं। 'वाचनालय से' द्वारा श्री अमृत खरे जी के परिश्रम से हमें ऐसी जानकारियां मिलती हैं जिनसे हम सर्वथा वंचित ही रहते हैं। एतदर्थ उनका साधुवाद। 'काव्यायन' में सभी कवितायें अपना विशेष स्थान रखती हैं फिर भी कालजयी काव्य के अतिरिक्त डॉ.कैलाश निगम, गौरीशंकर वैश्य विनम्र की कवितायें रुचिकर लगीं। *-प्रमोद कुमारी*

एम.एस.३७, सेक्टर डी, अलीगंज, लखनऊ

***

प्रधान सम्पादक जी बधाई के पात्र हैं

जो आर्य्य लोक वार्ता के प्रत्येक अंक में उच्चकोटि का सम्पादकीय लिखते हैं। जनवरी १४ अंक का सम्पादकीय 'जहाँ खिला था आर्य लोक वार्ता का कमल', 'वेदांजलि', 'दयानन्द चरितम्', 'जिज्ञासा समाधान', 'वाचनालय से', 'अक्षरलोक', वैदिक विदुषी डा.शान्तिदेव बाला की प्रस्तुति 'जीवन जीने का वास्तविक सूत्र' आदि अनुपम हैं। 'होता परिचय' के अन्तर्गत नये लोगों के श्रेष्ठ कर्मों एवं उज्ज्वल चरित्र से हम परिचित होते हैं। वैदिक विचारधारा के इस पत्र का इसी प्रकार प्रसार होता रहे, यही प्रभु से प्रार्थना है।

-पाल प्रवीण

एम.एस.१२०, सेक्टर डी, अलीगंज, लखनऊ

***

अक्षर लोक

लखनऊ की लेखिकाओं की संस्था 'अभिव्यक्ति' द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाले कहानी संग्रह की दसवीं कड़ी है- **'अस्तित्व'**। इन कहानी संकलनों में लखनऊ के साथ-साथ देश-विदेश की भी कतिपय लेखिकाओं की कहानियाँ स्थान पाती रहती हैं। 'अस्तित्व' में भी नयी-पुरानी, युवा-वृद्ध, जीवित-दिवंगत और स्थानीय-दूरस्थ कथा-लेखिकाओं के अस्तित्व को मान दिया गया है। सुप्रसिद्ध कथाकार गौरापंत शिवानी को समर्पित इस कथा-संकलन में उन्नीस रचनाओं ने स्थान पाया है जिनकी भाव-भंगिमायें अलग-अलग हैं, सिवा इसके कि सबमें नारी-मन ही बोलता है।

'अस्तित्व' के सम्पादक-मण्डल में लखनऊ की दिग्गज बन चुकीं लेखिकाएँ शामिल हैं- डॉ.शान्तिदेव बाला, डॉ.उषा चौधरी, सुषमा श्रीवास्तव, शारदा लाल, शशि जैन, डॉ.अमिता दुबे, अलका प्रमोद और डॉ.उषा राय- किन्तु उनका सम्पादकीय कौशल 'साफ छुपते भी नहीं, सामने आते भी नहीं' वाले अन्दाज़ का ही है। यही कारण है कि पुस्तक में 'अभिव्यक्ति' संस्था का ज़िक्र है पता गायब है! लेखिकाओं का मोबाइल नम्बर तो है, परिचय गायब है। 'अभिव्यक्ति' को उत्सुक इन लेखिकाओं-सम्पादकों का नारी-सुलभ संकोच अगले प्रकाशनों तक टूट सकेगा, ऐसी आशा की जानी चाहिए।

'अभिव्यक्ति' (साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था) के लिये 'अस्तित्व' का प्रकाशन 'सुलभ प्रकाशन' (१७, अशोक मार्ग, लखनऊ-२२६००१) ने किया है। सादगी साथ प्रकाशित डेढ़ सौ पृष्ठों के इस संकलन का मूल्य दो सौ रुपये मात्र है। यह पठनीय और संग्रहणीय है।

प्राचीन भारत में वैज्ञानिक ग्रन्थ भी पद्य में रचे जाते थे। संस्कृत भाषा में

ऐसे ग्रन्थों का विपुल भण्डार है। इसका लाभ यह था कि वैज्ञानिक तथ्य पाठकों-छात्रों को सूत्र रूप में मिल जाते थे और आसानी से कण्ठस्थ हो जाते थे। कालान्तर में पद्य का स्थान गद्य ने ले लिया। इसमें अभिव्यक्ति की सुविधा थी। जरूरी नहीं कि वैज्ञानिक कवि भी हो। लेकिन अगर वैज्ञानिक कवि भी हो, तो पद्यमय वैज्ञानिक ग्रन्थ आज भी संभव हो सकते हैं। इसका एक उदाहरण है, राजा भइया गुप्ता कृत पुस्तक 'गीतमय विज्ञान कारण'। इसी पुस्तक से चन्द्र ग्रहण पर एक कविता देखिये-

करते हुए परिक्रमा, यह स्थिति बन जाय।
सूर्य-चन्द्र के बीच में जब पृथ्वी आ जाय।।
पृथ्वी की छाया पड़े, चन्द्र न पूर्ण लखाय।
होय पूर्णिमा रात में, 'चन्द्र ग्रहण' कहलाय।।

राजा भइया गुप्ता का यह प्रयोग रोचक है। आशा है विद्यार्थियों को पसन्द आयेगा। साठ पृष्ठीय पेपर बैक पुस्तक को स्वयं कवि ने प्रकाशित किया है। बन्योटा, बाँदा निवासी रचनाकार से अस्सी रुपये वाली यह पुस्तक प्राप्त की जा सकती है।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा प्रसारित

'विकल्प' त्रैमासिक का शब्दावली विशेषांक अपनी पारंपरिक गरिमा और गम्भीरता के साथ प्रकाशित हुआ है। इसमें एक से बढ़कर एक लेख पढ़ने को मिलते हैं। 'हिन्दी शब्दावली' शीर्षक लेख में डॉ.रामलखन गुप्त लिखते हैं कि किसी भाषा की शब्दावली या शब्द सम्पदा उसकी रीढ़ की हड्डी होती है, जो उसके शरीर को खड़े होने की शक्ति प्रदान करती है। जिस भाषा की शब्दावली जितनी अधिक प्रचुर तथा अर्थ की दृष्टि से सुस्पष्ट और प्रखर होगी, उस भाषा का राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रसार-प्रयोग उतना ही अधिक होगा।

'पारिभाषिक शब्दावली का कोई विकल्प नहीं' शीर्षक डॉ.शिव गोपाल मिश्र लिखते हैं कि किसी भी 'शब्दावली' में शब्द निर्माण मुख्य क्रिया है। शब्द निर्माण के लिये कुछ नियम बनाये जाते हैं। उदाहरणार्थ हिन्दी साहित्य में 'जल' के साथ 'ज', 'द' या 'धि' जोड़कर 'जलज', 'जलद' 'जलधि' शब्द बनते हैं, जिनके अर्थ भिन्न भिन्न हैं। एक बार इस भेद को जान लेने पर शब्द निर्मित करना या शब्द का अर्थ समझना आसान हो जाता है।

हिन्दी की 'पारिभाषिक शब्दावली' पर आरोपित दुरूहता को स्पष्ट करते हुए डॉ.बालेन्द्र शेखर तिवारी लिखते हैं कि हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली पारिभाषिक है, साधारण बोल चाल की नहीं। यह सबके लिये या बहुससंख्यकों के लिये भी नहीं है, केवल उन गिने चुने लोगों के लिये है, जो किसी प्राविधिक विषय का विशेषाध्ययन करना चाहते हैं। यह वर्तमान पीढ़ी के लिये नहीं, भविष्य के लिये है। निश्चय ही पारिभाषिक शब्दावली दैनिक व्यवहार में नहीं आती।

निश्चित ही 'विकल्प' का यह अंक पठनीय, प्रशंसनीय और संग्रहणीय है। वैसे विकल्प' पत्रिका निजी वितरण के लिये ही प्रकाशित होती है, तथापि इसे हिन्दी के गम्भीर पाठकों तक पहुँचना ही चाहिए।

हास्य-व्यंग्य की पत्रिका 'अट्टहास' ने हास्य-व्यंग्य शिल्पी के.पी.सक्सेना

पर केन्द्रित विशेषांक प्रकाशित कर हास्य-व्यंग्य के पुरोधा को अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की है। इस अंक में के.पी. सक्सेना के जीवन को खंगालने का प्रयास करते चरित्र-लेख भी हैं, संस्मरण भी हैं, प्रियजनों की श्रद्धांजलियाँ भी हैं, उनके लिखे हास्य-व्यंग्य भी हैं और के.पी. के झूठे लतीफे भी! निश्चित ही 'अट्टहास' का यह अंक के.पी. के बहुआयामी व्यक्तित्व को उजागर करने में समर्थ है। के.पी. के साहित्यिक परिजन, प्रियजन और भक्तजन इसे अवश्य ही संभालकर रखना चाहेंगे। ●

धारावाहिक-(41)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

शतपथ ब्राह्मण में एक सुन्दर दृष्टान्त है। यज्ञ में प्रजापति को अपने पक्ष में करने के लिए उनके पुत्रगण देवता और असुर दोनों आपस में लड़ने लगे। असुर बड़े अहंकारी थे। किसी दूसरे की परवाह न करके वे अपने ही मुँह में आहुतियाँ डालने लगे। छीना-झपटी का परिणाम यह हुआ कि उनमें परस्पर अनबन हो गई और वे परास्त हो गए। देवता लोग स्वयं अपने मुँह में न डालकर एक-दूसरे के मुँह में आहुति दान करने लगे। उनमें परस्पर प्रेम हो गया। प्रजापति उन्हीं की ओर हो गए। देवताओं का यज्ञ पूरा हो गया।

परोपकार, वास्तव में, एक महायज्ञ है जिससे समाज में एकता, शान्ति और पारस्परिक प्रीति स्थापित होती है। 'परहित-सदृश धर्म नहिं भाई।' -तुलसी। श्रुति का आदेश है कि एक-दूसरे का पोषण करके तुम परम कल्याण को पाओ-

'परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।'

(घ) दान-परोपकार से आत्मिक आनन्द मिलता है:- यह एक विचित्र, किन्तु यथार्थ बात है कि मनुष्य को स्वयं थोड़ा शारीरिक और आर्थिक कष्ट उठाकर भी दूसरों का कष्ट दूर करने में एक प्रकार का अनिर्वचनीय आनन्द प्राप्त होता है। दूसरों को खिलाकर खाने में अथवा भूखे रह जाने में भी आत्म-तृप्ति का अनुभव होता है। इसके विपरीत, दूसरों को भूखा रखकर स्वयं अपना पेट भर लेने में आत्मग्लानि होती है। दूसरों को सुखी करने से मनुष्य को हृदय में कृतकृत्यता की जो स्वानुभूति होती है, वह अन्य उपाय से दुर्लभ है। पद्म पुराण में कहा है कि जहाँ सदा अपने मन को ही सुख मिलता है, वह स्वर्ग भी नरक के समान है; अतः साधु पुरुष सदा दूसरों के सुख से ही सुखी होते हैं-

मनसो यत्सुखं नित्यं स स्वर्गो नरकोपमः।
तस्मात्परसुखेनैव साधवः सुखिनः सदा।।

-पद्म पुराण

दान-परोपकार से आत्मा का स्वाभाविक प्रस्फुरण, उसकी सद्वृत्तियों का पोषण होता है। चित्त की प्रसन्नता का संभवतः यही रहस्य है।

(ङ) दान-परोपकार से आत्मबल बढ़ता है:- किसी भी प्रकार को लोकोपकारी कार्य से मनुष्य का आत्मबल दृढ़ होता है और उसकी सहृदयता- सजीवता का परिचय मिलता है। प्रत्येक मानवीय शक्ति सदुपयोग से बढ़ती है और दुरुपयोग से क्षीण होती है। ज्ञान देने से ज्ञान बढ़ता है, मान देने से मान बढ़ता है, सुख देने से सुख बढ़ता है- इसी प्रकार धन देने से धन की वृद्धि होती देखी जाती है। हँसने से हृदय का सुख घटता नहीं, बढ़ता है। सात्विक दान से सचमुच ऐश्वर्य मिलता है, व्यक्तित्व का विकास होता है। दानी और परोपकारी के मनोबल के पीछे कितनी शुभकामनायें, कितनों का आशीर्वाद और लोकबल रहता है। इसलिए वह क्षीण कैसे होगा? परामार्थ से तो पुरुषार्थ ही प्रकट होता है। दानवीर को महावीर कहा गया है।

इन बातों से दान-परोपकार की सार्वजनिक उपयोगिता सिद्ध हो जाती है। अब यह प्रश्न उठता है कि सर्व साधारण द्वारा यह कार्य कैसे हो सकता है? दान-परोपकार की महत्ता को स्वीकार करते हुए भी सब दानी कैसे हो सकते हैं? जिसके पास पर्याप्त धन नहीं है, वह क्या देगा?

४-परमार्थ के साधन

इन बातों का उत्तर यह है कि केवल धन से ही दान-परोपकार नहीं होता। दान-परोपकार का उद्देश्य तो यह है कि जो वस्तु आपके पास है, उससे दूसरों को लाभ उठाने दीजिये। आपके पास दीपक हो तो उससे दूसरों को भी अपना दीपक जला लेने दीजिये। यदि आपके पास रुपये नहीं हैं तो अन्य साधन तो हो ही सकते हैं, जिनसे आप दूसरों की, कष्ट-पीड़ितों की, अपने से दुर्बल प्राणियों की सहायता कर सकते हैं। परोपकार के लिये तो लोग हँसते-हँसते अपना शरीर और प्राण दे देते हैं। इन वस्तुओं की कमी तो किसी जीवित प्राणी को नहीं होगी। आत्म-बलिदान से बढ़कर दूसरा दान कौन होगा?

दान के बहुत से साधन हैं। महाभारत में लिखा है कि द्रोण जब अपनी दीनावस्था में परशुराम से कुछ माँगने महेन्द्र पर्वत पर गये तो त्यागी परशुराम ने कहा-मैं तो अपनी सारी सांसारिक विभूतियाँ दान में दे चुका हूँ, अतएव तुम्हें धन देने में असमर्थ हूँ- मेरे पास मेरी विद्या ही शेष है।; तुम चाहो तो उसे ले सकते हो। द्रोण ने विद्या-दान लेना स्वीकार कर लिया। इसी प्रकार देने और लेने की कितनी ही वस्तुएँ हो सकती हैं। यह आवश्यक नहीं कि आपके पास कर्ण के कवच-कुण्डल हों तभी आप दान का साहस करें। कवच-कुंडल न सही, निर्धन को कुरता ही देकर कृतार्थ कीजिए। और कुछ नहीं तो दूसरों को मंगल-कामना दीजिये, आशीर्वाद दीजिये, शुभ सम्मति सान्त्वना दीजिये, उनके कष्टों की ओर ध्यान दीजिये, भूलों के लिये क्षमा दीजिये और बड़ों को सम्मान ही प्रदान कीजिये। किसी को आप बना-बनाया घर नहीं दे सकते, परन्तु संकट में शरण तो दे ही सकते हैं; पैसे न सही, शक्ति, सहयोग, सहानुभूति, आँसू की दो बूँदे तो दे ही सकते हैं। और कुछ नहीं तो आप समय पर पत्रोत्तर, नौकरी का वेतन और ऋणदाता को उसका रुपया ही सचाई के साथ देकर लोक का बड़ा उपकार कर सकते हैं। सबसे बड़ा दान तो अभय दान है जो सत्य-अहिंसा का पालन करने से दिया जा सकता है। 'अभयः सर्वभूतानां नास्ति दानमतःपरम्।'-पद्मपुराण।

सत्य यह है कि सहस्र रुपयों वाले ने सौ, सौ वाले दस, और किसी ने थोड़ा सा पानी ही दिया तो सब बराबर है-

सहस्रशक्तिश्च शतं शतशक्तिर्दशापि च।
दद्यादपश्च यः शक्त्या सर्वेतुल्यफलाः स्मृता।।

-शान्तिपर्व

अपने को सर्वथा अयोग्य और असमर्थ नहीं मानना चाहिए। हमारी साधारण वस्तु भी दूसरे के बड़े काम की हो सकती है। जो हमारी दृष्टि में अनावश्यक है, वही अर्थी की दृष्टि में परमावश्यक हो सकती है। सात्विक दान की सभी वस्तुयें अमूल्य हो जाती हैं। केवल दुर्बल दधीचि की हड्डियों से इन्द्र का वज्र बन गया था। दान में पुण्य भी समाया रहता है। वह प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक कार्य को दिव्य बना देता है।

मनुष्य के स्वभाव में उदारता हो तो वह निर्धन होकर भी दूसरों का हित साधक बन सकता है। त्यागी महात्माओं ने क्या संसार को किसी से कम दान दिया है? गरीब गोस्वामी तुलसीदास ने आकुल-व्याकुल भारतीय समाज को रामचरितमानस प्रदान करके क्या कम लोकोपकार किया है? अल्प साधनों से जो बड़ा काम करते हैं, उन्हीं की प्रशंसा होती है। व्यास के कथनानुसार, जो शक्ति सामर्थ्य से अधिक दान देते रहते हैं ऐसे सज्जन ही श्रेष्ठ पुरुषों में सम्मानित होते हैं-'अतिशक्त्या प्रयच्छन्ति सन्तः सद्भिः समागताः'-महाभारत। दीनों के दान की महिमा कम नहीं है।

दान-परोपकार के लिए प्रत्येक व्यक्ति समर्थ हो सकता है और उसे होना भी चाहिए। इसी में जीवन की शोभा है। दीनता का बहाना करके परमार्थ से मुंह मोड़ना कायरता है।

(मनुष्य का विराट् रूप से साभार क्रमशः)

व्याख्यान माला

अनन्त की खोज

-आनन्द गिरि-

बीसवीं शताब्दी के छठे-सातवें दशक में आर्य समाज के मंच पर महात्मा आनन्द गिरि जी महाराज के प्रवचनों की धूम रहती थी। आर्य सदस्यों के अतिरिक्त सामान्य जनता भी उनके व्याख्यानों के लिए लालायित रहती थी। उन दिनों जितना तेजी से प्रकाशमान हुए; उतनी ही द्रुतगति से वे अन्तर्ध्यान भी हो गये और दे गये यह 'अनन्त की खोज'। 'अनन्त की खोज' में आनन्द गिरि जी के सुन्दर व्याख्यान हैं; जिन्हें हम सर्वसाधारण के लाभार्थ प्रकाशित कर रहे हैं। एतदर्थ हम आर्यदीप प्रकाशन, मिर्जापुर (उ.प्र.) के प्रति आभार प्रकट करते हैं। -सं.

प्रथम दिवस

आत्म-विस्मृति

नाना भाववती विभूति जननी ब्राह्मी प्रमारूपिणी
सत्य ज्ञान वहा तमोविनशना ब्रह्मैक वेद्या शिवा।
आर्षी-तत्व विवेचिकातिगहना वेदैक रूपागिरा
येनादौ प्रकटीकृता भगवती तस्मै नमो ब्रह्मणे।।
मधु वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्न सन्त्वोषधी।।

उपस्थित भद्र पुरुषों और श्रद्धा के योग्य माताओं,

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आर्य समाज मुरादाबाद के अधिकारियों ने आप सब के सम्मुख उपस्थित होने का मुझे अवसर प्रदान किया। एक सप्ताह मुझे आपके सामने बोलना है। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी और उनके रचित ग्रन्थों को पढ़कर मैं जो कुछ भी समझ पाया हूँ आगे प्रस्तुत करूँगा। मैं न तो कोई विद्वान् हूँ और न उपदेशक। आपकी तरह मैं भी एक जिज्ञासु हूँ। यह सम्भव है कि मेरी अभिव्यक्ति त्रुटि पूर्ण हो। किन्तु मैं जिस ज्ञान की चर्चा करने जा रहा हूँ वह निर्भ्रम है। महर्षि दयानन्द की जीवनी और उनके रचित ज्ञानकोश मैंने पढ़े। मुझे लगा कि ऋषि का जीवन अपौरुषेय वेद ज्ञान परम सत्य की प्रयोगशाला है। उन्होंने ऋतम्भरा प्रज्ञा से वेदार्थ के सिंहद्वार की अर्गला खोली। ब्रह्मोद्यान में प्रवेश किया और हमारे लिए कभी न मुरझाने वाले पुष्प चुनकर लाये। मध्य युग के अन्धकार से निकाल कर प्रकाश में लाने वाले आधुनिक भारत के शिल्पी दयानन्द का दर्शन, वेद का दर्शन है। उनकी वाणी परमात्मा की अमृतवाणी है। मैं अकिंचन अल्पज्ञ उनके ज्ञान के बारे में कुछ बोलना चाहता हूँ। तुम्हें जो भी कुछ सत्य अनुभव होगा वह महर्षि का है वेद का है। और जो कुछ भी असंगत और त्रुटिपूर्ण लगे वह मेरा समझा जाय! मैं एक वेदमंत्र प्रस्तुत करता हूँ - 'न विजानामि यत् इव इदमस्मि?' मैं क्या हूँ मैं नहीं जानता हूँ। अपने को न जानना आत्म विस्मृति है। आज हम यहीं से आरम्भ करेंगे।

पाटलिपुत्र के युवराज अजातशत्रु ने विद्रोह कर दिया। अजातशत्रु राज्य चाहते थे। वृद्ध बिम्बसार ने मंत्रिमण्डल की बैठक बुलाई। सम्राट पुत्र के व्यवहार से क्षुब्ध थे। अनुभवी अमात्य ने कहा कि 'युवराज में सत्ता की भूख जाग गयी है। सम्राट उसे शासन करने के लिए कोई प्रान्त दे दें।' अजातशत्रु को एक प्रान्त का राज्यपाल बना दिया गया। युवराज के सलाहकारों ने राय दी 'सम्राट शक्ति की भाषा समझते हैं। आपने विद्रोह की धमकी दी, प्रान्त का शासन मिल गया क्यों न सैन्य संगठन करके आपको सम्राट पद पर प्रतिष्ठित किया जाय। यौवन काल सत्ता की प्रतीक्षा में कट गया तो फिर वृद्धावस्था में मिला राज्य-सुख किस काम का रहेगा? युवराज अजातशत्रु ने धीरे-धीरे शक्ति-संचय किया और एक दिन अवसर पाकर पाटलिपुत्र पर आक्रमण करने के लिए निकल पड़ा। सम्राट ने पुनः स्थिति को सुलझाने के लिए मन्त्रि परिषद् का आह्वान किया। बूढ़े मंत्री ने सम्राट को राय दी कि राजधानी छोड़कर शेष राज्य युवराज को दे दिया जाय। सम्राट ने ऐसा ही किया। अजातशत्रु के सलाहकारों ने अपनी विजय पर प्रसन्नता मनाई। किन्तु सम्राट द्वारा राजधानी रख लेने पर दुःख प्रकट किया। 'ओह राजधानी रहित राज्य वैसा ही है जैसा कि आत्मा निकला हुआ शरीर। अब बूढ़े सम्राट के पास रह क्या गया है? क्यों न एक झटके में राजधानी पर अधिकार कर लिया जाय।' राजधानी मिलने न मिलने से अजातशत्रु स्वयं हीनता का अनुभव कर रहा था। अतः उसने तत्काल राजधानी पर अधिकार करने का आदेश दिया। वृद्ध सम्राट ने पुनः मंत्रि-परिषद् बुलाई। बूढ़े मंत्री ने राय दी कि युवराज को सबकुछ दे दिया जाय। सम्राट किसी चमत्कार की आशा में थे। अमात्य के फैसले से चकित रह गए। अमात्य ने कहा-'अन्ततोगत्वा राज्य युवराज को देना ही है तो क्यों न अभी दे दिया जाय।' अजातशत्रु की सेनाओं ने बिना एक बूँद भी रक्त बहाए राजधानी अधिकार में कर ली। अजातशत्रु युवराज से सम्राट बन गया। भविष्य की आशंकाओं को दूर करने के लिए उसने बूढ़े सम्राट को कारागृह में डाल दिया। सम्राट का शीघ्र मर जाना सुरक्षा की दृष्टि से आवश्यक समझ अजात अपने पिता को विभिन्न प्रकार की यातनाएँ देने लगा। एक दिन अजातशत्रु के पुत्र की अँगुलि में अकस्मात् पीड़ा उठ आयी। बालक पीड़ा से तड़प रहा था। उसकी अँगुलि में विषैला फोड़ा निकल आया था। "जब तक सारा विष बाहर नहीं निकलेगा राजकुमार की पीड़ा शान्त नहीं होगी।" -वैद्यराज ने कहा। अजात शत्रु का वात्सल्य जल स्रोत की तरह फूट पड़ा। अपने प्राणों की परवाह न करके उसने पुत्र की अँगुलि का विष चूस कर निकाल डाला। राजमाता जो उस दृश्य को देख रही थीं जोर से हँस पड़ीं। "माँ तुम क्यों हँसी?" अजातशत्रु ने पूछा। बूढ़ी माता ने कहा- "बेटा एक बार तेरी पीठ में ऐसा ही एक विषैला फोड़ा निकला था। तेरे पिता ने भी अपने प्राणों की परवाह न करके उसके विष को चूस लिया था।" माता के एक वाक्य ने अजात के मर्म को भेद दिया। आज तक वह युवराज बन कर सब कुछ सोचता और करता चला आया था। माता के इस वाक्य ने उसे एहसास कराया कि वह युवराज ही नहीं एक पुत्र भी है और बिम्बसार राजा ही नहीं उसके पिता भी हैं। कारागृह की ओर वह भागता हुआ चला। पश्चाताप के आँसू बह रहे थे और वह पितृचरणों में गिरकर अपराध की क्षमा चाहता था। कारागृह के द्वार पर उसकी पगध्वनि बूढ़े सम्राट ने सुनी। यातनाओं से दुःखी बिम्बसार घबरा गया। बूढ़े शरीर में और नयी यातना सहने की शक्ति नहीं थी। अस्तु सम्राट ने शरीर छोड़ दिया। कारागृह के द्वार तोड़े गये। पिता के मृत शरीर को देखकर अजातशत्रु दुःख से पागल हो गया।

इस कहानी को पढ़कर मेरे दिल में एक विचार उठा। आखिर वह क्या बात थी जिसने उस पुत्र इस सीमा तक क्रूर कर दिया था?

अजातशत्रु आत्म-विस्मृति का शिकार हो गया था। उसे युवराज रूप का स्मरण तो था किन्तु अपने पुत्र रूप को भूल गया था। आत्म-विस्मृति का अर्थ है अपने स्वरूप को भूल जाना अर्थात् मूल से कट जाना। जब व्यक्ति स्वरूप को, अपनी यथार्थता को भूल जाता है तब सारा व्यवहार नितान्त स्वार्थ-केन्द्रित होता है। स्वार्थ परायणता स्वभाव में क्रूरता और अन्याय पैदा करती है। अपने निसर्ग से कटकर आरोपित व्यक्ति को आधार बनाने से पारस्परिक सम्बन्ध ऐसे ही हो जाते हैं। अजातशत्रु पहले पुत्र था, बाद में युवराज। अपने पहले स्वरूप को भूल जाने से उसके द्वारा पितृ हत्या का जघन्य पाप हुआ। ऐसे ही जब कोई समाज अपने यथार्थ स्वरूप को भूल जाता है और संस्कृति के मूल से कट जाता है तब स्थिति भयानक हो जाती है। समाज के लोग विभिन्न वर्गों में बँटकर एक दूसरे का शोषण करने लगते हैं और अन्याय का बोलबाला हो जाता है। पारस्परिक सहयोग और विश्वास नष्ट हो जाते हैं। व्यक्तिगत जीवन की सारी गन्दगी तैरकर समाज की अपनी सतह पर आ जाती है। सद्गुण विकृत हो जाते हैं। व्यक्ति खोखला हो जाता है। वीर कायर और विद्वान् राक्षस बन जाता है। आत्म-विस्मृति की बुद्धि तर्क का दुरुपयोग करती है और जीवन को उलझा कर हर प्रकार की समस्या खड़ी कर देती है।

(क्रमशः)

काव्यायन

बसन्त आगमन

❑रघुराज सिंह

वसुधाधर में वसुधाधर में औ'
सुधाधर में त्यों सुधा में लसै।
अलिवृन्दन में अलिवृन्दन में,
अलिवृन्दन में अति सै सरसै।
हियहारन में हर हारन में,
हिमिहारन में रघुराज लसै।
ब्रजबारन बारन बारन बारन,
बारन बार बसंत बसै।

रे बसन्त रसभीने !

❑जयशंकर 'प्रसाद'

पात बिनु कीन्हें जिन्हें पतझर रोष करि
नित सब द्रुमन सुमन पूर कीन्हें तू।
शारद कुमोदिनी के बिरह बिहाल अलि,
सहकार मंजरी सों मोद भरि दीन्हें तू।
नगर बनाली कोकिला की काकली भर्यो,
सुखद 'प्रसाद' रस रंग केलि भीने तू।
छोह छरि लीने मन और करि दीने,
रे बसन्त रसभीने कौन मंत्र पढ़ि दीने तू।

आयेगा बसन्त

❑डॉ. कैलाश निगम

चेतना जगा के
युग चेतना पटल मध्य
अपने उदात्त
सुविचार लिख दीजिये।
जहाँ-जहाँ तम के
खिले हों काले फूल वहाँ
अपनी प्रभा से
उजियार लिख दीजिये।
अज्ञता-तिमिर की
समस्त मानसिकता पे
ज्ञान का असीम
पारावार लिख दीजिये।
वाटिका में आयेगा
बसंत फिर एक बार
एक-एक पाँखुरी पे
प्यार लिख दीजिये।।

-4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

बसन्त

❑राजाभइया गुप्ता 'राजाभ'

फूलों की खुशबू लिये, पागल पवन बसंत।
इठलाती मदमस्त हो, चली मिलन हित कंत।।

फागुन में बौरा गया, मेरे मन का आम।
यत्र तत्र ढूँढ़त फिरे, प्रिय को आठों याम।।

सरसों फूली देख कर, अन्तस हुआ विभोर।
सुधि आई प्रिय पाश की, नाच उठा मनमोर।।

मादक गंध समीर ले, पहुँचाये सन्देश।
प्रीति प्रतीक्षारत यहाँ, प्रिय आ जा निज देश।।

कानाफूसी कर रहे, रंग बिरंगे फूल।
मिलन आस बढ़ने लगी, सब ऋतु के अनुकूल।।

सूरज-बल बढ़ने लगा, शीत हुई कमजोर।
पतझड़ वस्त्र उतारकर, वन को दे नवभोर।।

-बी 2/356, सेक्टर-ए, जानकीपुरम, लखनऊ

'निराला' के प्रति

हिन्दी के विद्वान सरस्वती के निराले पूत,
महाकवि छन्दकार मनुज महान थे।
छन्द नित्य तोड़-तोड़ शब्द नव जोड़-जोड़,
छन्द और मुक्त छन्द रचे छविमान थे।।
जीवन को मथकर सोमरस दान किया,
जगहित एक वे निराला वरदान थे।
साहित्य-मही पे नित्य कांति बिखेरते रहे,
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' दिनमान थे।।

-डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

-जी-02, लोरपुर रेजीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

मामा-माहात्म्य

❑जयप्रकाश शुक्ल

मां और मा मिलकर मामा बनता
दोनों में कितनी समता है।
मां को यदि मां से जोड़ दिया
तो रहती नहीं विषमता है।
दोनों ही सगे सहोदर हैं
हैं एक पिता की संतानें।
भाई बहनों का अंश एक
हम इतना अंतर क्यों मानें।
पहले माँ को बोला जाता
तब ही मामा बन पाता है।
दोनों के अक्षर मिलने से
संयोग बड़ा बन जाता है।
मामा के उच्चारण भर से
माँ की छवि सदा उभरती है।
प्रतिरूप आँख में बस जाता
श्रद्धा आकर्षित करती है।
मामा के उज्ज्वल मन में
सुख कामना सदा रहती।
चाहे कितना रूठे आँखों में
प्रेम त्रिपथगा ही बहती।
मेरे सर पर दो हाथ बड़े
जो ज्ञान वेद के हैं स्वरूप।
वह देव पुत्र सतयुग के हैं
दुर्लभ जीवित है अभी रूप।।

-एस एस-1624, आशियाना, लखनऊ

हर्ष-चतुष्पदी

कर्म-महत्त्व

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

धार्मिक और हो अन्यायी,
दोष धर्म पर मढ़ना बेवफाई।
कर्म पूरा, आइने को साफ रख-
'हर्ष' देगा सहर्ष बधाई।।
कर्म से बना दशरथ,
कर्म से बना दशमुख।
उद्देश्य कैसा भाव कैसा-
कर्म ही जग में है सबकुछ।।

-अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी गीत

सबसे बड़ा वही है जग में

❑गोपाल सिंह नेपाली

कहने को सम्राट बड़ा है, और सुखी धनवान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।

पाकर जन्म यहाँ जो रहता, दो दिन तिनके जोड़कर,
आज नहीं तो कल चल देगा, दुनियाँ से मुख मोड़कर।
भेंट चढ़ा दे जो तन-मन की, सच्चा उसका ज्ञान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।

इस जग में हर चंचल मानव, अपना ही घर भरता है,
जीता है अपनों की खातिर, अपनों पर ही मरता है।
जो औरों के लिये उजड़ता, जग में उसका मान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।

श्रद्धा है वरदान भक्ति का, सुन्दर त्याग तपस्या है,
अपनी धुन पर मरमिट जाना, सबसे कठिन समस्या है।
यही समस्या जो हल करले, उसका ही जय-गान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।

मरने की धुन वह मस्ती है, जो ताजों को ठोकर दे,
घनी-अँधेरी रातों को भी, जो झिलमिल पूनम कर दे।
नस-नस में है आग लगी, तो होठों पर मुस्कान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।

जिसको सुख प्यारा है जग में, वे करते हैं, प्रार्थना,
जो चाहें ऐश्वर्य करें वे, मन्दिर-मन्दिर अर्चना।
किन्तु शहीदों को मरना ही, धर्म-भजन है, ध्यान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।

जो चाहे, मैं बनूँ पुजारी, वह पूजे भगवान को,
जो चाहे कि बनूँ संन्यासी, छोड़े सकल जहान को।
जो चाहे, शंकर बन जाऊँ, वह करता विष-पान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।

एक हुए ऋषि दयानन्द जो, हँसते-हँसते मर गये,
अपना जीवन-दीप बुझा कर, दिव्य दिवाली कर गये।
उनका प्यार बना स्वतन्त्रता, का पावन अभियान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।

दिया भरा प्याला विष का तो, पगली मीरा पी गई,
मर मिट गये पिलाने वाले, वह मर कर भी जी गई।
आज उसी के रंग से होती, भक्तों की पहचान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।

भक्त रिझाते रहे राम को, लेकर धन की झोलियाँ,
गाँधी हुए 'राम' को प्यारे, खा सीने पर गोलियाँ।
उनके यश की अमर पताका, जग में हिन्दुस्तान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।

पुण्य सताया जाये जगत में, पाप सताता जायेगा,
पर बलिदान सदा दुनियाँ को, राह बताता जायेगा।
यहाँ शहीद समय का ज्ञानी, पापी जग नादान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।

राष्ट्रीय दोहे

❑डॉ.कविता वाचक्नवी

शीश सजा हिम का मुकुट, धोय समंदर पाँव।
ऐसी भारत माँ बसे, सुन्दर मेरे गाँव।।

वर्षा भारी असम में, सूखा राजस्थान। अपने सब त्यौहार हैं, अपने हैं सब खेल।
पर सोना उपजा रहे, मिल मजदूर किसान।। तोड़े से न टूटता, अपना ऐसा मेल।।

प्राण पुष्प से पूजते, हो जाते बलिदान। अपना यह परिवार है, अपने हैं सब लोग।
सीमा पर हुंकारते, सिंह समान जवान।। साथ सभी मिलकर सहें, दुःख, आपदा, रोग।।

रंग-रंग के लोग हैं, रंग-रंग के फूल। ज्योतिर्मय जग को किया, दिया वेद का ज्ञान।
मेरे प्यारे देश में रंग-रंग की धूल।। विश्ववंद्य भारत रहा, संस्कृति सूर्य समान।।

भाषा चाहे अलग हैं, अलग नहीं है भाव। अस्त्र-शस्त्र की होड़ में पगलाया संसार।
एक नदी में तैरतीं, तरह-तरह की नाव।। सत्य, अहिंसा, प्रेम हैं भारतीय उपचार।।

('शान्तिधर्मी' से साभार)

राजस्थान-समाचार

कुष्ठ रोगी भी समाज के अभिन्न अंग

कोटा, ६ जनवरी २०१४। आर्य समाज जिला आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा हरिओम नगर स्थित कुष्ठ रोगियों की बस्ती में गर्म ऊनी कपड़े वितरित किये गये। जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा की अगुवाई में जिसमें सुप्रसद्धि समाजसेवी व गोविन्द धाम ट्रस्ट के अध्यक्ष भीमसेन साहनी, आर्य समाज रेलवे कालोनी के प्रधान हरिदत्त शर्मा, विज्ञान नगर के प्रधान जे.एस.दुबे, गायत्री विहार के प्रधान अरविन्द पाण्डेय, रामप्रसाद याज्ञिक, आर्य विद्वान अग्निमित्र शास्त्री, दर्शन पिपलानी, राजीव आर्य आदि हरिओम नगर पहुँचे। आर्य समाज द्वारा कुष्ठ रोगी महिलाओं को साड़ियां, सूट, शॉल, पुरुषों को पैन्ट, शर्ट व बच्चों को टोपे मफलर मोजे आदि वितरित किये गये। इस अवसर पर जिला प्रधान श्री चड्ढा ने कहा कुष्ठ रोगी भी समाज के अभिन्न अंग हैं। इन्हें तिरस्कार नहीं सहानुभूति दें। आर्य समाज असहायों, पिछड़े लोगों की सहायता करना अपना कर्त्तव्य समझता है। समाजसेवी भीमसेन साहनी ने कहा कि दरिद्र की सेवा नारायण की सेवा है इसे करके हमारा जीवन धन्य हो जाता है।

वेदों में है संसार का समस्त उपयोगी ज्ञान

कोटा, १० जनवरी। चारों वेदों के सतत अध्ययन के उपरान्त सेवा भावना की जो प्रेरणा मुझे मिली है उसका वर्णन करना कठिन है। उक्त विचार आर्य समाज महर्षि दयानन्द नगर तलवण्डी कोटा के सदस्य सुरेशचन्द्र गुप्त ने आर्य समाज तलवण्डी द्वारा उनके सम्मान में आयोजित एक अभिनन्दन समारोह में व्यक्त किये। ७६वर्षीय श्री गुप्ता पिछले तीन वर्षों से लगातार वेदोंका अध्ययन कर रहे थे। आपने चारों वेदों का पारायण कर लिया है। आपने बताया कि वेद समस्त सत्य ज्ञान का पुस्तक है जिनके द्वारा प्राप्त ज्ञान से मुझे सत्य एवं अनुपम सुख की अनुभूति हुई है। मैं चाहता हूं कि आर्य समाज एवं अन्य मंचों के माध्यम से इसका प्रचार प्रसार करूं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि यह कोटा के लिए एक ऐतिहासिक अवसर है कि एक आर्यपुत्र ने सभी के लिए प्रेरणादायी कार्य किया है। अध्ययन के बाद वद ज्ञान का प्रचार प्रसार करने के लिए इन्होंने जो बीड़ा उठाया है इसके लिए श्री गुप्ता एवं उनका परिवार साधुवाद का पात्र है। श्री चड्ढा ने कहा कि परिवार के सहयोग से ही इस प्रकार का अध्ययन संभव हो पाता है।

पूनम सूरी का सम्मान

कोटा, २ जनवरी। जयपुर में आयोजित डी.ए.वी.कालेज के कार्यक्रम में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी.कॉलेज प्रबंधकर्त्ती समिति नई दिल्ली के चेयरमैन आर्य शिरोमणि श्रीमान पूनम सूरी का आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा सम्मान किया गया। जयपुर के वैशाली नगर के डी.ए.वी.सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल में आयोजित सर्वेष्टि यज्ञ महोत्सव व 'आओ श्रद्धा के साथ आनन्द की ओर चलें' कार्यक्रम के विशाल मंच पर मुख्य अतिथि पूनम सूरी का आर्य समाज कोटा के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा व कार्यालय सचिव अरविन्द पाण्डेय ने राजस्थानी साफा व मोतियों की माला पहनाकर आर्य जिला सभा का स्मृतिचिन्ह भेंट किया। मंच पर श्री टी.आर. गुप्ता, एस.के.शर्मा, सतपाल आर्य, डा.राजेश कुमार, एम.एल.गोयल, अशोक शर्मा आदि महानुभाव उपस्थित थे।

विकलांगों को कम्बल वितरित

कोटा, ८ जनवरी। रंगबाड़ी रोड, कोटा के आसपास कच्ची बस्तियों में निर्धनों व विकलांगों का कम्बल वितरित किये गये। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि पिछले २० वर्षों से फुटपाथ पर खुले हुए सोते हुए निर्धन एवं मांगकर व छोटी मोटी मजदूरी करके जीवन बसर करने वालों को रात को ठिठुरते हुए चादर, टाट आदि ओढकर सोते हुए लोगों को आर्य समाज जिला सभा द्वारा कम्बल वितरिण का कार्य निरन्तर जारी है। आर्य समाज दल ने रंगबाड़ी रोड, कच्ची बस्ती, खड़े गणेश जी रोड व आसपास में निर्धनों व विकलांगों को कम्बल वितरित किये। एक विकलांग को बीमारी की अवस्था में उसकी झोंपड़ी के अन्दर जाकर कम्बल व गर्म कपड़े दिये गये तथा एक विकलांग अमर सिंह को तिपहिया विकलांग साइकिल पर कम्बल ओढ़ाया गया। आर्य समाज के जे.एस.दुबे, हरिदत्त शर्मा, आचार्य अग्निमित्र, अरविन्द पाण्डेय, रामप्रसाद याज्ञिक, समाजसेवी दर्शन पिपलानी ने कम्बल-वस्त्र वितरण में पूरा सहयोग दिया।

सीतापुर-समाचार

राजा टोडरमल जयन्ती

सीतापुर, १०.०१.२०१४। भारतीय राजस्व प्रणाली के जनक राजा टोडरमल की ५११वीं जयन्ती स्थानीय कलेक्ट्रेट स्थित राजा टोडरमल पार्क में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री शिव नारायण शर्मा की अध्यक्षता में मनाई गई। मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ने कहा कि राजा टोडरमल अकबर के नवरत्नों में से एक थे। वे भू-कृषि विज्ञ थे। वे ब्रज भाषा के अच्छे कवि भी थे। अपर जिला अधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय, सिटी मजिस्ट्रेट सर्वेश दीक्षित, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष आशीष मिश्र आदि ने गरिमामयी उपस्थिति दर्ज की।

कार्यक्रम के आरम्भ में राजा टोडरमल स्मारक समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय पुरी सहित अतिथियों द्वारा राजा टोडर मल की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। तत्पश्चात् राजीव शर्मा, कपिल जायसवाल, रामदास वैश्य, चन्द्रगुप्त श्रीवास्तव, जमुना प्रसाद शर्मा, अखिलेश खरे, समाजसेवी नदीम खाँ आफरीदी, आर.पी.सिंह आदि ने अपने विचार रखे। अन्त में मुख्य अतिथि की अध्यक्षता में काव्यगोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसमें गोपाल सागर, अम्बरीश श्रीवास्तव, अनुराग शुक्ला, सुधांशु त्रिवेदी, रामकुमार गुप्ता, मुजीब सीतापुरी, भालेन्दु दत्त त्रिपाठी, अवधेश शुक्ला आदि ने काव्यपाठ किया। *('विनम्र')*

हरदोई-समाचार

आर्य समाज संडीला

०१.०२.१४ को आर्य समाज मंदिर सण्डीला में वसंत पंचमी पर्व उल्लासपूर्ण वातावरण में डॉ.सत्यप्रकाश, प्रधान आर्य समाज की अध्यक्षता में मनाया गया। यज्ञ के पश्चात् बसन्तागम से संबन्धित भजन और प्रवचन हुए।

मीरजापुर-समाचार

सामवेद पारायण यज्ञ

मीरजापुर जनपद में आर्यनेता श्री बेचनसिंह आर्य के पुरुषार्थ एवं प्रयत्न से वर्ष भर चलने वाले कार्यक्रमों की शृंखला की कड़ी के रूप में चुनार के सन्निकट ग्राम घनइसा में सामवेद पारायण यज्ञ आचार्य विश्वव्रत शास्त्री, आचार्य आर्ष गुरुकुल जानकीपुरम लखनऊ के संरक्षण में सम्पन्न हुआ।

तीन दिन तक चलने वाले इस यज्ञ में हजारों की संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम से प्रभावित होकर अन्य कई स्थानों पर आने वाले दिनों में वेदपारायण यज्ञ आयोजित करने का निश्चय किया गया।

आजमगढ़-समाचार

शुभनारायण गुप्त को पत्नीशोक

आर्य समाज आजमगढ़ के वरिष्ठ सदस्य श्री शुभनारायण गुप्त की धर्मपत्नी श्रीमती सावित्रीदेवी गुप्त का देहान्त हो गया। वैदिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार हुआ तथा शान्तियज्ञ का आयोजन किया गया; जिसमें पारिवारिक जनों, आर्यसमाज एवं दयानन्द शिक्षा संस्थान के सदस्यों ने भाग लिया तथा दिवंगत आत्मा की शान्ति और सद्गति के लिए प्रार्थनाएँ कीं।

'आर्य लोक वार्ता' स्व.सावित्री जी के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करता है तथा परमात्मा से प्रार्थना है कि श्री शुभनारायण गुप्त को इस वियोग व्यथा को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

टण्डा-समाचार

वैवाहिक स्वर्ण जयन्ती

सफल और सार्थक वैवाहिक जीवन के पचास वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य में

टाँण्डा (अकबरपुर) के व्यवसायी दम्पति- श्री भूपेन्द्र मेहरोत्रा एवं श्रीमती उमा मेहरोत्रा की वैवाहिक स्वर्ण जयन्ती दिनांक ०३.०२.२०१४ को निराला नगर लखनऊ के प्रसिद्ध जे.सी.होटल में समारोहपूर्वक मनाई गई। इस अवसर पर स्वल्पाहार एवं प्रीतिभोज की सुरुचिपूर्ण व्यवस्था की गई। समारोह का विशेष आकर्षण था- वैदिक यज्ञ- जिसे वैदिक विद्वान् डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने सम्पन्न कराया। मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज टाण्डा की प्रधानाचार्या सुश्री प्रशिषा श्रीवास्तव तथा डी.ए.वी.एकेडमी की प्रधानाचार्या ने यज्ञ में सहयोग प्रदान किया। आर्यनेता श्री आनन्द कुमार आर्य कोलकाता से समारोह स्थल पर पहुँचे थे। यज्ञ में भाग लेने और शुभकामनाएँ अर्पित करने वालों में प्रमुख थे- वीरेन्द्र कुमार टण्डन, महेश कपूर, आदेश टण्डन (कानपुर); डा.अश्वनी टण्डन, डा.अनुराग टण्डन, विनोद कपूर, दीपक बहल (वाराणसी); डा.संजय टण्डन, विक्रम टण्डन (दिल्ली), राजेश जालान (मऊ), डा.शिव खन्ना (मुंबई), निमेश टण्डन (कोलकाता); डा.पंकज मेहरोत्रा (लखनऊ); राजेश टण्डन (नोएडा)।

डॉ.वेद प्रकाश आर्य के प्रवचन ने मेहरोत्रा दम्पति तथा आगन्तुक अतिथियों पर स्थायी प्रभाव अंकित किया। भूपेन्द्र मेहरोत्रा ने आगन्तुक अतिथियों के प्रति आभार प्रदर्शित किया तथा आयोजन की सफलता हेतु श्री आनन्द कुमार आर्य को धन्यवाद दिया। *(वीना वर्मा)*

अनुकरणीय!

जनवरी २०१४ अंक में प्रकाशित 'जहाँ खिला था आर्य लोक वार्ता का कमल' शीर्षक सम्पादकीय लेख से प्रभावित होकर इं.जे.पी.अग्रवाल, २०१४, गायत्रीलोक, कनखल (हरिद्वार) ने 'आर्य लोक वार्ता' को रु.१४,१००/- (चौदह हजार एक सौ रुपये) का सहयोग प्रदान किया है। 'आर्य लोक वार्ता' की किसी रचना को पुरस्कृत अथवा प्रोत्साहित करने का यह अब तक का सबसे बड़ा योगदान है।

श्री जे.पी.अग्रवाल को हम कोटिशः धन्यवाद देते हैं। निश्चय ही यह योगदान वेद-प्रचार जैसे पवित्र उद्देश्य में आर्य लोक वार्ता की समर्पण भावना लिए है। *-डॉ.वेद प्रकाश आर्य*

हरदोई-समाचार

सीताष्टमी पर्व

आर्य समाज सण्डीला (हरदोई) के तत्वावधान में २३ फरवरी २०१४ को सीताष्टमी पर्व मनाया गया, जिसमें यज्ञोपरान्त भगवती सीता के जीवन और आदर्श पर वक्ताओं ने प्रकाश डाला। दिनांक २४ फरवरी २०१४ को महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया।

आर्य समाज सण्डीला द्वारा २० सूत्रीय मुद्दों को लेकर एक पत्रक वितरित किया गया है। पत्रक में उन्हीं प्रत्याशियों को लोकसभा चुनाव में समर्थन देने की बात कही गयी है, जो २० सूत्रों को लागू करने का वचन दें।

हरियाणा-समाचार

माता स्व.धापादेवी आर्या की पुण्य स्मृति

झज्जर, १२.०१.१४। यज्ञ समिति झज्जर के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में स्व.माता धापा देवी आर्या की पुण्य स्मृति के अवसर पर यज्ञ भजन प्रवचन अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें पतंजलि योगपीठ हरिद्वार से ब्र. भारद्वाज एवं नै.ब्र.मानसिंह पधारे। उन्होंने कहा कि हमारा संगठन प्रत्येक व्यक्ति के जीवन और व्यवस्था में वैदिक शिक्षा और संस्कारों का पूर्ण समावेश चाहता है। आर्य समाज झज्जर के मंत्री लाला प्रकाशवीर आर्य ने कहा कि आर्य समाज के नियम विश्व शान्ति के आधार हैं। कार्यक्रम के आरम्भ में श्री भगवान सिंह के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। भारत स्वाभिमान झज्जर के योग प्रशिक्षक रामनिवास जी की देखरेख में अपने संगठन की वेशभूषा में ३५ बच्चों ने विभिन्न स्तुपों, कठिन आसन, यौगिक जोगिंग के अभ्यास का प्रदर्शन किया। पं. रमेश चन्द्र कौशिक, जयभगवान आर्य एवं महावीर आर्य ने भजन प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन विजय आर्य पानीपत ने किया तथा अध्यक्षता सूबेदार भरत सिंह ने की। डा.आजाद सिंह दूहन, धर्मसिंह आर्य प्रधान आर्य समाज झज्जर, प्रवीण आर्य, प्रेमसिंह, आचार्य बलदेव, प्रदीप शास्त्री, सूर्य प्रकाश, राजेश खेड़ी खुम्मार, नरेश ग्वालिसन, चन्द्रपाल, पनसिंह, महाशय नन्दराम, ओम प्रकाश, माता टीडो देवी, रोशनी आर्या, कौशल भटनागर, सोनिया आर्या आदि गण्यमान महानुभाव उपस्थित रहे। संयोजक महाशय रतीराम आर्य ने कृतज्ञता प्रकट की।

लखनऊ-समाचार

व्यवस्था परिवर्तन के लिए तैयार रहें

–आचार्य आर्यनरेश

आर्य समाज लालबाग का उत्सव

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस के संदर्भ को लेकर आर्य समाज लालाबाग एवं आर्य उपप्रतिनिधि सभा, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में एक भव्य समारोह ५, मीराबाई मार्ग स्थित आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.के परिसर में दिनांक १६.०२.१४ को प्रातः १० बजे से आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि एवं वक्ता थे- आचार्य आर्यनरेश, उद्गीथ साधनास्थली, हिमाचल प्रदेश।

आचार्य आर्यनरेश ने अपने प्रभावशाली उद्बोधन में महर्षि दयानन्द के उज्ज्वल चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा वैदिक ज्ञान को पुनः भारतभूमि में प्रकाशित करने के महत्कार्य का वर्णन किया। आचार्यप्रवर ने कहा 'आज देश दुर्दशाग्रस्त है, राष्ट्र को विखण्डित करने वाली ताकतें सर उठा रही हैं, ऐसी दशा में देश के युवकों और युवतियों को जाग्रत होकर व्यवस्था परिवर्तन के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए। देश में नई व्यवस्था को कायम करना वर्तमान युग की माँग है।

समारोह के प्रारम्भ में यज्ञ सम्पन्न हुआ तथा राधेश्याम शर्मा की भजन मंडली ने सुन्दर भजन का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस अवसर पर लखनऊ के आर्य समाजों के प्रतिनिधिगण बड़ी संख्या में उपस्थित थे, जिन्होंने बड़े मनोयोग से आचार्य जी के व्याख्यान को सुना और मार्गदर्शन प्राप्त किया।

कार्यक्रम श्री मनीष आर्य प्रधान आर्यसमाज लालबाग की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ तथा संचालन डॉ.मोहनलाल अग्रवाल मंत्री आर्य समाज ने किया। प्रीतिभोज के साथ काग्रक्रम का समापन हुआ। *(सं.सू. पाल प्रणीत)*

आर्य समाज हसनगंज का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज हसनगंजपार (डालीगंज) का ६९वां वार्षिकोत्सव दि.२१,२२,२३ फरवरी २०१४ को आर्य समाज मंदिर में पं.प्रेमशंकर शुक्ल की अध्यक्षता में समारोहपूर्वक मनाया गया। प्रथम दिवस यज्ञ डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। प्रथम दिवसीय प्रवचन में डॉ.आर्य ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के उस मौलिक चिन्तन पर प्रकाश डाला जिसमें महर्षि ने मानव जीवन का उद्देश्य-सत्यासत्य का निर्णय करना और कराना निरूपित किया है।

उत्सव में प्रतिदिन प्रातःकाल यज्ञ, भजन-प्रवचन हुए तथा सायंकाल भजनोपदेश और व्याख्यानों का क्रम चलता रहा। प्रख्यात संन्यासी स्वामी सौम्यानन्द जी के आध्यात्मिक प्रवचन तथा धनुर्विद्या के ज्ञाता श्री नेमप्रकाश आर्य भजनोपदेशक के ओजस्वी भजन हुए। डॉ.वीरेन्द्र परिव्राजक एवं श्री सेवकराम आर्य का -वैदिक ध्यान योग का प्रदर्शन एवं अभ्यास- रोचक एवं प्रभावशाली बन पड़ा। समस्त कार्यक्रमों का संयोजन आनन्द चौधरी एडवोकेट, मंत्री आर्य समाज ने किया। प्रधान पं.प्रेमशंकर शुक्ल ने आभार प्रदर्शन किया। उत्सव को सफल बनाने में श्री देवेन्द्र नाथ चौधरी, डॉ. अरविन्द नाथ पाण्डेय तथा आलोक चौधरी का सहयोग सराहनीय रहा।

वैदिक सत्संग अलीगंज

'योगाश्रम' वैदिक सत्संग, अलीगंज में १६ जनवरी को श्रीमती शीला पाल जयन्ती समारोह मनाया गया जिसमें यज्ञ डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। संयोजक श्री पाल प्रवीण ने स्मरण दिलाया कि प्रत्येक वर्ष १६ जनवरी को आचार्य विद्यासागर दीक्षित की जयन्ती व सकट चतुर्थी के दिवस पर श्रीमती शीला पाल की जयन्ती पर यज्ञ व गोष्ठी का आयोजन होता है।

श्रीमती शीला पाल

इस अवसर यज्ञोपरान्त सुश्री प्रणीता द्वारा लिखित माता शीला पाल के प्रति श्रद्धांजलि रूप में कविता पाल प्रवीण ने सुनाई। सर्वश्री सेवकराम आर्य, प्रेम शंकर शुक्ला, शिवशंकर लाल वैश्य, एस.आर.नागपाल, श्रीमती नागपाल, श्रीमती निगम, एस.एल.शुक्ला श्रीमती प्रमोद कटियार, शोभा सिन्हा, नवनीत सहगल, कमलेश पाल, शशि रस्तोगी, गीतांजलि, देविका, प्रभा नागू, सरला आर्य, द्वारिका प्रसाद शुक्ल इत्यादि ने अपनी उपस्थिति दर्ज की।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ सत्संग

आचार्य विश्वव्रत शास्त्री द्वारा संस्थापित सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट के तत्वावधान में दि. ४ से ७ फरवरी २०१४ तक यजुर्वेद पारायण एवं सत्संग सभा का कार्यक्रम सेक्टर-जी, कुर्सी रोड, टेढ़ी पुलिया चौराहे पर भारतीय स्टेट बैंक के समीप ३/७२, शुक्ल सदन में आयोजित किया गया। नित्य प्रति प्रातः एवं सायं उभय सत्रों में यज्ञ, भजनोपदेश एवं वेद प्रवचन होते रहे। समारोह में पं. शिवकुमार शास्त्री, सहारानपुर पं.यशदेव आर्य, बरेली, आचार्य सन्तोष वेदालंकार, लखनऊ, आचार्य विश्वव्रत शास्त्री एवं पं.रामलखन शुक्ल ने अपने मौलिक चिन्तन से जनता का मार्गदर्शन किया। समारोह में क्षेत्रीय जनता ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

स्मृति दिवस

दि.०५.०२.२०१४ : श्री बनवारी लाल मिश्र, बरौलिया (डालीगंज) के आवस पर स्व.श्रीमती प्रेमवती पांडे की पुण्य स्मृति में वैदिक यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री पंकज कुमार मिश्र तथा श्रीमती पंकज ने यजमान आसन ग्रहण किया। परिवार के समस्त सदस्यों तथा आसपास के नर-नारियों ने श्रद्धापूर्वक यज्ञ में भाग लिया। यज्ञ के आचार्य डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने अपने प्रवचन में दैनिक अग्निहोत्र तथा संध्योपासना करने पर विशेष बल दिया। कु.दीक्षा तथा आकांक्षा ने नित्य ईश्वर प्रार्थना तथा संध्या के मंत्रों का पाठ करने का व्रत लिया। कार्यक्रम डा.अरविन्द नाथ पाण्डेय के संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ।

पुण्य-स्मृति

मेरी प्रिय धर्मपत्नी श्रीमती निर्मल कुमारी की इस माह की छठवीं पुण्य-तिथि (२२.०२.१४) आध्यात्मिक एवं धार्मिक विचारों की धनी परम त्यागी, परिवार और समाज के लिए पूर्ण रूप से समर्पित पुण्य आत्मा को हम द्रवित हृदय से याद करते हैं।

–नरसिंह पाल - पति
हिमांशु कुमार - पुत्र, अभिषेक कुमार - पुत्र
करुणा कुमारी - पुत्री, लता कुमारी - पुत्री

आर्य्य लोक वार्ता

ऋत्विक्-मंडल

(प्रतिवर्ष १२०० रु. या अधिक सहयोगकर्त्ता)

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, ज्वालापुर, **हरिद्वार**; विद्यासागर फाउण्डेशन, **मेरठ**; अम्बिका प्रसाद एडवोकेट, **लखनऊ**; आनन्द कुमार आर्य, **कोलकाता**; श्रीमती वीना उतरेजा, राजाजीपुरम, **लखनऊ**; पाल प्रवीण, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती कमलेश पाल, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती वीना कटियार, **फर्रूखाबाद**; श्रीमती प्रमोद कुमारी, अलीगंज, **लखनऊ**; जगदीश खत्री, **लखनऊ**; ओजोमित्र शास्त्री, महावीरगंज, **लखनऊ**; अभिषेक, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती गीतांजलि, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मिनी स्वरूप, **नई दिल्ली**, कर्नल पाल प्रमोद, **मेरठ**; अरविन्द कुमार, आर्कीटेक्ट, **लखनऊ**; श्रीमती शालिनी कुमार, आर्कीटेक्ट, **लखनऊ**; श्रीमती नीरजा सिंह, प्रधानाचार्या, टाण्डा, **अम्बेडकरनगर**; श्रीमती मधुर भंडारी, **नई दिल्ली**; रमेश चन्द्र त्यागी, **लखनऊ**; ओमप्रकाश सेवक, **लखनऊ**; प्रो.आनन्द वैद्य, **लखनऊ**; पीयूष गुप्त, **सिंगापुर**; श्री रमनलाल अग्रवाल, नजीराबाद, **लखनऊ**; श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, **बरेली**; कृष्ण स्वरूप चौधरी, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती सुन्दरी दरियानी, **लखनऊ**; ले.कर्नल चन्द्रमोहन गुप्त, **लखनऊ**; डॉ.सी.वी.पाण्डेय, सर्वोदय नगर, **लखनऊ**; अखिल मित्र शास्त्री, महावीरगंज, **लखनऊ**; श्रीमती प्रमिला पाल, मवाना, **मेरठ**; निशीथ कंसल, विवेकानन्दपुरी, **लखनऊ**; दीपक कुमार दर्शन, अमीनाबाद **लखनऊ**; बी.एन.टण्डन, **बहराइच**; अनूप टण्डन, **मेरठ**; श्रीमती कुसुम वर्मा, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; वेद प्रकाश बटुक, **मेरठ**; सतपाल महाजन, **गुड़गाँव**; प्रणव श्रीवास्तव, **अहमदाबाद**; नरेन्द्र भूषण, जानकीपुरम, **लखनऊ**; आर. सी. यादव, सत्या क्लीनिक, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; इं.प्रेमचंद, गोविन्द विहार, **लखनऊ**; चौधरी रणवीर सिंह, प्रधान, आर्य समाज, **सीतापुर**; श्रीमती मंजू रेलन, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्री कृष्ण सिंह, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मनीषा त्रिवेदी, **दुबई**; कौशल किशोर श्रीवास्तव, नया तिलक नगर, **लखनऊ**; अर्जुनदेव चढ्ढा, कोटा, **राजस्थान**; नरसिंह पाल एडवोकेट, राजीव नगर, **लखनऊ**; नरदेव आर्य, एल.डी.ए.कालोनी, **लखनऊ**; श्रीमती मीना दीक्षित, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती इन्द्रा शर्मा, डालीबाग,**लखनऊ**; इं.जे.पी. अग्रवाल, गायत्रीलोक, कनखल, **हरिद्वार**।

शान्ति यज्ञ

दि.०२.०२.२०१४ : श्री एन.के.सिंह, ए-११०३/१० इन्दिरा नगर के आवास पर स्व.नितिन सिंह की पुण्य स्मृति में शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री एन.के.सिंह एवं श्रीमती मंजू ने यजमान का आसन ग्रहण किया तथा तनू एवं दिशा- दोनों पुत्रियों के साथ श्री महीन्द्र कुमार सिंह, साधना, मीरा, गौरव, विवेक सिंह इत्यादि ने यज्ञ में सक्रिय भागेदारी निभाई। बताते चलें कि श्री एन.के. सिंह के एकमात्र पुत्र नितिन का २७ वर्ष की अल्पायु में ही २६ जनवरी २०१४ को निधन हो गया। सारे परिवार के लिए यह वज्रपात ही था। ऐसे समय यज्ञ के माध्यम से परमात्मा से प्रार्थना की गई कि वह परिवार को धैर्य और शक्ति तथा दिवंगत आत्मा को शान्ति और सद्गति प्रदान करे।

नामकरण संस्कार

दि.१६.०२.२०१४ : श्री अतुल चौधरी (प्रवक्ता, राजकीय जुबली इण्टर कालेज) की पौत्री का नामकरण संस्कार 'शुभकामना भवन' इन्दिरा नगर (नीलगिरि चौराहे के पास) के भव्य प्रांगण में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

नवजात बालिका की माता ऋचा, पिता श्री प्रणव के साथ चौधरी परिवार के अभिभावक श्री शान्तिस्वरूप चौधरी (सीतापुर), श्रीमती संतोष चौधरी (पूर्व प्रधानाचार्या, आर्य कन्या इंटर कालेज सीतापुर), सुश्री रंजना चौधरी, शुभा चौधरी, सीमा तथा बालिका के नाना नानी श्री जे.पी.सिन्हा एवं श्रीमती किरण सिन्हा सहित बड़ी संख्या में पारिवारिक जनों ने यज्ञ प्रीतिभोज में भाग लेकर बालिका पर आशीर्वादों की सुमनवृष्टि की। आचार्य डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने संस्कार सम्पन्न कराया। बालिका का नाम 'ऋतिप्रेक्ष्या' रखा गया।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
'वेदाधिष्ठान' 539क/234, हरीनगर, पो0-इन्दिरानगर, लखनऊ - 226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
9450500138

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
व्रती सदस्य	–	250 रु. वार्षिक
ऋत्विक् सदस्य	–	1,200 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	2,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	12,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 00500 2000 00579
खाते का प्रकार–चालू खाता
बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, हजरतगंज लखनऊ। IFSC code - BARBOHAZARA

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
डॉ.(श्रीमती)वीना कटियार, फर्रूखाबाद
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, राजस्थान
श्रीमती प्रमोद कुमारी, लखनऊ
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
श्री कौशल किशोर श्रीवास्तव, लखनऊ
श्री जगदीश लाल खत्री, लखनऊ
श्रीमती कुसुम वर्मा, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई
शिवशंकर लाल वैश्य, सीतापुर

आवश्यक सूचना

कृपया लखनऊ स्थित शिविर कार्यालय के पते का उपयोग करें–
डॉ. वेद प्रकाश आर्य,
प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता
19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226 016

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-२, हिमांशु सदन, ५-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' ५३९क/२३४ हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।